भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ का 5 वॉ राष्ट्रीय अधिवेशन

दिनांकः 30 जनवरी 2007 समयः दोपहर बारह बजे

स्थान :

परेड ग्राउंड, माघ मेला, अर्द्धकुम्भ प्रयाग

सभी पत्रकार बंधु सादर आमंत्रित है

कृपया अपने आगमन की सूचना 20 जनवरी 2007 तक अवश्य भेंज दें ताकि आपके प्रवास आदि की व्यवस्था सुचारु रुप से की जा सके।

मिथिलेश द्विवेदी
राष्ट्रीय संरक्षक

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय
राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रधान कार्यालयःपत्रकार भवन, गधियॉव, करछना, इलाहाबाद–212301 मो.9935205341

गणतंत्र दिवस एवं नववर्ष २००७ पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय की तरफ से सभी छात्र/छात्राओं एवं विद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाऐं

प्रबंधक
आन्जनेय दास जी महाराज

प्राचार्य
डॉ0 उपेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

संघर्ष हमारा सहयोग आपका

नववर्ष २००७ एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर की बीआरडीपीडी कॉलेज बरहज के सभी छात्र छात्राओं की हार्दिक बधाई

राजनारायण पाल उर्फ राजू पाल
भावी प्रत्याशी अध्यक्ष पद

अपनी बात वर्ष : 6, अंक : 03

विश्व स्नेह समाज

लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

जनवरी 07

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कानाफुसीः 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

अन्दर पढ़िए

कैलाश गौतम जन्म दिवस पर विशेष–5
को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ–8,
प्रयाग एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–9,
अन्य दार्शनिक स्थल–14,
इलाहाबाद यातायात के साधन–15,
बूढ़ों के साथ लोग कहां तक....–16,

स्थायी स्तम्भः

चिट्ठी आई है–3,
कहानी–17,22,30,
स्नेह बाल मंच–20,
व्यक्तित्व–21,
अध्यात्म–23,
कैरियर–25,स्वास्थ्य–26,
साहित्य समाचार–27,मनोविज्ञान–28,
कविताएं –29,
ज्योतिष–31,
इधरउधर की/जरा हंस दो मेरे भाय–32,
पुस्तक समीक्षा–33

चिट्ठी आई है

पत्रिका का अंक मिला. आभारी हूँ. हिन्दी की विविध विधाओं की रचनाओं को पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई. भारतीय आध्यात्मक और संस्कृति की सुगंध से अंक दमदम कर रहा है. सस्कारोंन्नयन करने वाले रचनाकारों के चयन में आपकी सम्पादकीय मनीषा काबिले कद्र है. आद्यशंकराचार्य और रुद्राक्ष पर प्रकाशित आलेख विशेष प्रशंसनीय हैं. कृपा रहे.

डॉ० सत्येन्द्र अरुण, लखीसराय, बिहार

सादर नमस्कार. पत्रिका का ताजा अंक मिला. हार्दिक आभार. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की गतिविधियों के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई. संस्थान तथा इस पत्रिका से आप अच्छा कार्य कर रहे हैं. ताजा अंक में भी कैलाश त्रिपाठी का ओलख पठनीय लगा. शेष सामग्री ठीक है. पत्रिका के मुद्रण पर विशेष ध्यान दें क्योंकि बहुत से पृष्ठों पर मुद्रण अस्पष्ट हैं. सामग्री के चयन में भी और अधिक सजग रहें तो अच्छा परिणाम मिल सकता है. राजनीति, आदमी और आदमी को तोड़ती है, जबकि साहित्य जोड़ता हैं. अतः पत्रिका में राजनीतिक सामग्री की बजाय साहित्य को स्थान दें तो बेहतर होगा. स्नेह संवाद बनायें रक्खें.

डॉ. पुरुषोत्तम 'प्रशान्त',
संपादक मध्यान्तर

आपकी पत्रिका से स्नेह एवं अटूट लगाव है. इसे मैं अपना भरपूर सहयोग देता रहूंगा. आपका स्नेह मिलता रहे यही जीवन के अंतिम प्रहर में मेरे लिए संबल होगा. आशा है पत्रोत्तर अवश्य देगें. आपके लिए ढेर सारी शुभकमानाओं के साथ...

गिरीश प्रसाद गुप्ता,बैद्यनाथधाम देवधर

आदरणीय द्विवेदी जी, सादर नमस्कार आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका मिलती रहती है. पत्रिका का प्रकाशन उत्तम है तथा आप हिन्दी के विकास के प्रति भावना रखते हैं, यह इस पत्रिका के स्तर से साबित हो जाता है.

डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़, गोधरा

अत्र कुशलं तत्रास्तु. अप्रैल ०६ अंक मिला. आप स्नेह सौजन्य से अभिभूत एवं अनुगृहीत हूँ. स्वास्थ्य कारणों से पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ. पत्रिका में संकलित पूरी सामग्री को आद्योपांत पढ़ा. आपने सामग्री के चयन में श्रेय और प्रेय दोनों का बखूबी समन्वय किया है. मन-मस्तिष्क और हृदय दोनों को आप्लावित व अभिभूत करने वाली उत्कृष्ट सामग्री आलेख, कविताएं, ग़ज़ले, पर्यटन यात्रावृत्त, साहित्य मेला-०६ की ब्यौरेवार रपट, अध्यात्म, चुटकुले, हास्य विनोद आदि के चयन और संकलन में आपकी संपादकीय प्रतिभा स्पष्ट दिखाई देती हैं. मुद्रण भी यथा संभव निर्दोष और शुद्ध हैं. आपको हार्दिक अभिनंदन! आप निरामय रहें और दीघार्यु हो ताकि आपके नेतृत्व में हमारा विश्व स्नेह समाज भी अमर रहे. शुभमस्तु आपका अपना ही

प्रो. भगवानदास जैन,
मणीनगर, अहमदाबाद

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका का अंक मिला. आभार! आपने संपादकीय में 'संतो के साथ युवतियां....विषय पर लिखा. यह कटु सत्य है कि अनेकों संत, अपनी ताकत, पैसे व जादू टोने अथवा राजनैतिक पहुँच के जरिये इस प्रकार के घृणित कार्यो में लिप्त हैं. ऐसा केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं अन्य धर्मो के धार्मिक पुरुषों द्वारा भी यही सब किया जा रहा है. परन्तु क्या geeal kgl gSfd fdl h vkS/keZd

चिट्ठी आई है

सन्त के बारे में ऐसा कुछ लिख सकें? मैं सन्तों के द्वारा किये जा रहे किसी भी अनैतिक आचरण का घोर विरोधी हूँ. परन्तु केवल हिन्दू सन्तों की निंदा, हिन्दू धर्म पर छीटाकंशी, भगवान शंकर को व्यभिचारी, मां दूर्गा को शराबी कहने का विरोधीा हूँ. किसी भी धर्म में कहीं भी कमी है तो उसे उजागर करिये, साहित्य धर्म का पालन करना, जनता को जागरुक करना, हमारा धर्म है, बस केवल हिंदू धर्म का विरोध नहीं. क्या हिंदू धर्म एवं संस्कृति में कुछ अच्छा नहीं है, यदि है तो उसका महिमागान भी करें.

मान्यवर पत्रिका से ज्ञात हुआ कि साहित्य मेला-०६ का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, बधई. अनेक लेख, कहॉनी, गीत, कविता तथा व्यंग्य को समेटे पत्रिका संग्रणीय है. आशा है आपका स्नेह निरन्तर मिलता रहेगा. आपका स्नेहाकांक्षी

ए.कीर्तिवर्द्धन अग्रवाल,मुजफ्फरनगर

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

जिस अध्यात्मक राष्ट्र और समाज को वाणी देने के लिए आप संकल्पित है, वह निश्चय ही यह पत्रिका साकार करेगी. पं. उपाध्याय एवं श्री शास्त्री को आज कौन स्मरण करता है? वे अतीत के गर्त में दबे पड़े है, जबकि उन्होंने अपनी हड्डिया जलाकर जग को रोशनी लुटाई हैं. दिनकर की पंक्तियां याद हो जाती है-

जला अस्थियॉ बारी बारी,
छिटकाई जिसने चिनगारी
जो चढ़ गए चिता पर,
लिए बिना गर्दन का मोल

इन्हें प्रथम पृष्ठ पर स्मरण करआपने उन्हें सच्ची श्रद्धाजंली दी है. शंकराचार्य, रुद्राक्ष, रत्न, हास्य नाटिका आदि प्रेरक हैं. सभी लघुकथाएं मानवीय संवदेना एवं समकालीन सच को उजागर करती है. हम तो भारतवासी है, में भारत की समृद्ध परम्परा चरित्र, ज्ञान, राष्ट्रीयता, मानवता का उद्घाटन है, लो देश प्रेम जागरण का प्रयास भी, यह जन्मभूमि है परशुराम गांधीा, गौतम, गांधारी की. यह देवभूमि है, वेदभूमि, सिय की, शिव की शिवधारी की. आपकी पत्रिका सभी दिशाओं में जाकर प्रकाश फैलाती है

डॉ० मृत्युजंय उपाध्याय,धनबाद, झारखंड

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

पत्रिका का अप्रैल, जून एवं अगस्त०६ अंक समयानुसार मिला. यथासमय पत्रोत्तर न दे पाने के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ. जून अंक का सम्पादकीय समाज में व्याप्त एक कटु सच्चाई की और इंगित करता है तो अगस्त अंक का सम्पादकीय प्रशासन की सुस्ती का कच्चा चिट्ठा हैं. डॉ० राजबुद्धिराजा की कहॉनी 'वे लौट आई' तथा वसीयत अच्छी लगी. लघुकथायें तथा काव्यखंड भी दमदार हैं. पत्रिका का नियमित प्रकाशन आपके जीवट प्रयत्न को प्रर्दशित करता हैं. पत्रिका निरंतर निकलती रहे, इसी कामना के साथ. **डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा,** प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट, भोजपुर, बिहार-०१

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

अप्रैल०६ का अंक मिला. धन्यबाद. बेवाक संपादकीय के लिए बहुशः धन्यबाद. यह पत्रिका साहित्य, राजनीति तथा समाज की समसामयिक गतिविधियों पर अच्छी-खासी सामग्री प्रस्तुत कर रही हैं. हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न आप जैसे सपूतों को पाकर ही भारतमाता गौरान्वित होती हैं. प्रचार-प्रसार के इस महायज्ञ में शामिल आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाईयां. **डॉ० हरेराम पाठक,** डिगबोई महिला महाविद्यालय, डिगबोई, असम

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

पत्रिका का अंक मिला. आभार प्रस्तुत अंक में प्रकाशित विविध विषयक सामग्री पत्रिका के नाम के अनुकूल तथा रुचिप्रद हैं. व्यंग्य लेख 'मल-ए-रिया' तो लाजवाब ही हैं. भारतीय धर्म और संस्कृति से जुड़ी अनेक रचनाएँ भी पठनीय हैं. परन्तु पत्रिका का कागज निहायत घटिया कोटि का हैं. साथ ही मुखपृष्ठ पर तो हॅसती हुई आकृति आपने छापी है वह किसलिए? क्या वह मंडनमिश्र की पत्नी सरस्वती है जो उसके नीचे 'मठो के आचार्य भगवान आद्यशंकराचार्य को शास्त्रार्थ उपस्थित करा दिया हैं. पत्रिका के तन मन को थोड़ा गंभीर और आकर्षक होन चाहिए. तभी विश्व स्नेह समाज की विश्वसनीयता बढ़ेगी.

नीलमेन्दु सागर, बेगूसराय, बिहार

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

आप द्वारा प्रेषित अंक मिला. प्रसन्नता हुई. राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार एवं उन्नयन में आपकी भूमिका स्तुत्य हैं. पत्रिका में संयोजित एवं सम्पादित सामग्री पत्रिका के नाम एवं प्रतिष्ठा के अनुकूल है. हिंदी राष्ट्रीय एकता की कड़ी, श्री अमरनाथ जी पर पर्यटन आलेख, एवं पारिवारिक सन्दर्भ में आलेख मन भावन आदर्श पति बने. अच्छे लगे. गीत, ग़ज़ल, कविता एवं लघु कथायें आदि सभी विधाओं पर पत्रिका में सामग्री संजोई गई हैं. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से आपने समग्र विश्व के हिंदी प्रेमियों को एक मंच पर लाने का संकल्प लिया है. ऐसा संकल्प विरल संस्थायें ही कर पाती हैं. परमात्मा आपके संकल्प की पूर्णता में सहयोगी बनें. यही मेरी कामना हैं.

सनातन कुमार बाजपेयी,जबलपुर,मप्र.

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. पत्रिका में आप राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सभी विषयों को समेटे हुए हैं. आप की लगन इसे एक अच्छी पारिवारिक पत्रिका बनाने में सफल होगी. ऐसी आशा हैं. पत्रिका की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं.

तेज राम शर्मा, अनाडेल, शिमला

◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀ ◀◀

इनके भी पत्र मिले

१. रणवीर सिंह बाली, भिवानी, हरियाणा
२.पी.दुर्गा, प्रवक्ता, कुरनाल, आध्रप्रदेश
३.मौसम कुमार 'मौसम', मदरी, फतेहपुर

सम्मानित पाठक बन्धु

आपके स्नेह की बदौलत ही हम सफलता के छह वर्ष पूर्ण करने में सफल हुए है. आप अपनी शिकायतों व सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका में निखार लाने में हमें मदद मिल सके. हम आपकी शिकायतों/सुझावों पर विशेष ध्यान देते हैं. **संपादक**

८ जनवरी जन्मदिवस पर विशेष संस्मरण

हमने अपना एक सच्चा मार्ग दर्शक खो दिया

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

"और गोकुलेश्वर बेटा कैसे हो?" जब भी मैं उनसे मिलने जाता यही शब्द उनके मुंह से निकलते. मुझे एक सहयोगी ने फोन किया कि कैलाश गौतम अब नहीं रहे. एक मिनट को मुझे विश्वास हीं नहीं हुआ कि हरदम हंसने, और हजारों लोगों को हंसाने वाला साहित्य का पुरोधा अब हमें मार्गदर्शित करने के लिए नहीं रहा.

सितम्बर १९९६ को मेरा आकाशवाड़ी इलाहाबाद में पहले काव्य पाठ का रिर्काडिंग था. मैं आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी को ढूढनें के लिए निकला तो सामने एक बोर्ड पर पढ़ा वरिष्ठ उदघोषक कैलाश गौतम, मैं वहीं एक चपरासी से पूछा गौतम सर है क्या? उसने कहा हॉ बैठे है. मैं तुरंत उनसे मिलने उनके कमरे के अन्दर प्रवेश कर गया. यह मेरी पहली मुलाकात था, नाम तो बहुत सुना था पर देखा नहीं था. मैंने कहा-प्रणाम सर! उनका जबाब था-'हॉ, बोलो बेटा क्या काम है?'

मैंने कहॉ-'सर, बस यहॉ एक रिर्काडिंग के लिए आया था, आपका नाम पढ़ा तो मिलने चला आया.'

उसके बाद उन्होंने मेरा नाम, क्या करते हो, कहॉ रहते हो आदि ब्योरा पूछा.'

मैं चलने को हुआ तो उन्होंने कहा-बेटा, कभी कोई दिक्कत हो तो हमसे बताना और मिलते रहना.

मैं उस दिन चला आया. उनकी यादाश्त इतनी अच्छी कि उसके बाद मैं जब भी मिला उन्होंने मेरा पूरा नाम लेकर उसी अपनत्व वाली शैली में जैसे मेरा व उनका बहुत पुराना रिश्ता हो.

मुलाकातों का सिलसिला चलता रहा, जब भी मुलाकात होती, बिना चाय पानी के आने नहीं देते. चाहे वो आफिस में बैठे हो या घर में. कई बार तो ऐसा हुआ कि वो कहीं जाने को अपनी गाड़ी निकाल चुके होते मैं पहुंच जाता, तो भी वो कुछ देर बातें करने के बाद ही निकलतें. मेरे मना करने पर भी कहते नहीं, बेटा, तुम आयें हों तुम्हारा काम होना चाहिए.

दूसरी घटना तब की है कि जब मैं उन्हें अपने द्वारा इस पत्रिका के प्रकाशन व विमोचन के सिलसिले में बात करने के लिए मिला. मैंने कहा-अंकल जी, मैं एक सामाजिक

कैलाश गौतम धरती से जुड़े हुए सच्चे रचनाकारों में से थे. उन्होंने अनेक विधाओं में रचनाएं की सुप्रसिद्ध वो हास्य कविं के रुप में हुए. उनकी रचनाओं में जीवन मधुतिक्त सच्चाईया हैं. कैलाश गौतम साहित्याकार होने के साथ एक बहुत ही अच्छे मनुष्य और प्रायः सबके अच्छे साथी थे. उनकी बेवाक हंसी और ठहाके भविष्य में भी लोगों के कानों में गुजरती रहेगी.

श्री बुद्धिसेन शर्मा, वरिष्ठ ग़ज़लकार

मैं आकाशवाणी में हूँ

कैलाश गौतम जितने अच्छे कवि थे, उतने ही अच्छे इंसान भी. कैलाश जी से मेरा परिचय 1977 में हुआ था. एक दिन अकस्मात ही कैलाश भाई मेरे घर आए और मुझे एक कवि सम्मेलन में चलने का आमंत्रण दिया. मैंने पूछा आपको मेरा परिचय कैसे मिला. वे बोले–'मैं आकाशवाणी में हूँ.' मैंने कहा–मैंने आपका परिचय नहीं पहुँचा. वो ठहाका लगाकर हंस पड़े. यही से मुझे कैलाश भाई के हास्य कवि होने का आभास मिला. धीरे–2 उनसे परिचय बढ़ता गया और उनकी रचनाएं, उनका कृतित्व मेरे सामने आता गया. उन्होंने जीवन के रोज मर्रे की छोटी–छोटी बातों को जितने ध्यान से देखा जितनी सूक्ष्मता से उनका अनुभव किया और जितनी सहजता से उनको अभिव्यक्ति दी यह कार्य वहीं कर सकते थे. जीवन के गंभीर से गंभीर दर्द भरे अनुभवों को हसी ठहाकों के साथ अपने श्रोताओं के मन में उतार देना कविता की बहुत बड़ी खूबी है. अनुभव तो सब करते है लेकिन उन अनुभवों को कविता का विषय कैलाश गौतम जैसे सिद्ध कवि ही बना सकते हैं. मैं उनके कृतित्व ओर स्मृतियों को प्रणाम करती हूँ.

विजय लक्ष्मी विभा, लेखिका

८ जनवरी जन्मदिवस पर विशेष संस्मरण

पत्रिका निकालना चाहता हूँ?
उन्होंने कहा-बेटा, विचार तो बहुत अच्छा है, लेकिन बहुत ही कठिन कार्य हैं. निकालना आसान है, उसके बाद नियमित चलाना बहुत ही मुश्किल हैं. उन्होनें यह भी बताया कि कौन-कौन सी बडे-बड़े औद्योगिक घरानों की पत्र-पत्रिकाएं बंद हो गयी. या तो निकालों नहीं, और अगर निकालो तो सबसे हट कर हो.' मेरे लायक जो भी सेवा होगी मैं करुंगा. उन्होंने कुछ इलाहाबाद के लेखकों के नाम पते भी दिए और कहा कि तुम इन लोगों से मिल लेना. ये लोग भी तुम्हारी यथा सम्भव मदद करेगें साथ ही साथ कुछ विज्ञापन देने वाली फर्मो के नाम भी सुझाएं जहॉ थोड़ा आसानी से विज्ञापन मिल जाते हैं. लगभग दो घंटे की वार्ता में पत्रिका से संबंधित मुझे काफी जानकारी मिली.
मैंने उन्हें सरंक्षक के लिए कहा तो उन्होंने कहा बेटा, मैं तुम्हारी हर संभव मदद करुंगा. सरक्षक किसी और को बना लों. खैर काफी जदोजहद के बाद उन्होंने कहा मुझे नहीं बुद्धिसेन शर्मा को सरंक्षक बना लो, वो संपादक भी रहे है, उनका इस फील्ड का अच्छा ज्ञान भी है. उनका पता, फोन न० दिया और तुरंत स्वयं बात भी कर ली.
पत्रिका के एक साल पूरे होने पर मैंनें कार्यक्रम के लिए बात की तो उन्होंने कुछ अलग हटकर करने को कहा. खैर उनके व श्री बुद्धिसेन शर्मा अंकल के कहने पर मैंनें हिंदी-उर्दू काव्य सम्मेलन हिन्दूस्तानी एकेडमी में रक्खा. मुझे आज भी याद है कि मैंने किसी शायर व कवि को फोन नहीं किया. उन्होंने स्वयं नाम बताये, उन्हें अपना व्यक्तिगत कार्यक्रम कहकर बुलाया. उस कार्यक्रम में घर-घर कार्ड बांटने के लिए श्री बुद्धिसेन शर्मा जी ने मेरा साथ दिया. कार्यक्रम के एक घंटे पूर्व ६ ुआधार बारिश के बावजूद कार्यक्रम में इलाहाबाद के लगभग सभी हिंदी-उर्दू के नामी कवि-शायर उपस्थित हुए. कार्यक्रम बेहद सफल रहा. स्थानीय मीडिया ने भी अपने तरह के इस पहले हिंदी-उर्द्रू काव्य सम्मेलन को प्रमुखता से स्थान दिया.
उस कार्यक्रम की सफलता के पीछे सम्मानीय गौतम जी के योगदान को मैं कैसे भुला सकता हूॅ. अभी तो कुछ दिनों पहले मैं उनसे साहित्य मेला-०७ के संदर्भ में वार्ता किया था तो उन्होंने कहा-तुम जैसा कहोगें, वैसी सुविधा तुम्हें मिल जाएगी. एकेडमी मे मैं जब तक हूॅ तब तक तुम चिंता मत करो. ऐसे सच्चे मार्गदर्शक, गुरु को अब अपने बीच न पाकर अपनी व्यक्तिगत छति महसूस कर रहा हूॅ.

++++++++++++++++++++

कहो फलाने! अब का होई

कहो फलाने!
अब का होई
धइलस छूटल घाट धोबिनिया
अब त पटक पटक के धोई।।
थुकववलस चटववलस देखा
सौ-सौ नाच नचवलस देखा
पेड़ पहाड़ हवा हो गइलन
एक्कै हाथ देखवलस देखा
ओके त बकरा अस काटी
जे सरवा पड़वा अस रोई।।
राजा लेहलस रानी लेहलस
बेचारन क पानी लेहलस
उनहन पर का बीतत होई
जेकर कुल जजमानी लेहलस
बकसा बिलार हम बांड़े अच्छा
खैर मनावत हौ सब कोई।।
कटलस कान खियवलस भेली
नरकों में हौ ठेला ठेली
जे के देखा उहैं डॅटल हौ
राजा भोज अ गंगुवा तेली
दुनियॉ खड़ी तमासा देखी
जब भूॅजी तब तब करमोई।।
भइलै सिंह सियार देखला
देहलैं दॉत चियार देखला
फिर हो गइलैं बिना रीढ़ क
रोज करैं दरबार देखला
काट रहल हौ समय बेचारा
मॉज रहल जूठी बटलोई।
ऑख मूॅदला पीठ फेरला
जियै बदे दीवार घेरला
सिर उठाय जौ बोलल चाहा
हो जा फिर पंजाब केरला
जे छीनीं तेही अब खाई
ऊ नॉहीं जे पीसी पोई।।

श्री कैलाश गौतम

८ जनवरी जन्मदिवस पर विशेष संस्मरण

गौतमजी की बहुचर्चित रचना

पप्पू के दुलहिन

पप्पू के दुलहिन क चरचा कॉलोनी के घर घर में
पप्पू के दुलहिन के रक्खै अपने अंडर में
पपुआ इंटर फेल दुलहिया बी.ए. पास हौ भाई जी
पप्पू अस ऊ लध्दड़ नांही एडवांस हौ भाई जी
कहै ससुर के पापा जी औ कहैं सास के मम्मी जी
माई डियर कहै पप्पू के पप्पू कहैं मुसम्मी जी
पप्पू के दुलहिन क नक्शा कॉलोनी में हाई हौ
ढंग एकर बेढ़ब हौ सबसे, रंग एकर एकजाई हौ
बहूसुरक्षा समिति बनवले हौ अपने कॉलोनी में
बहुतन के ई सबक सिखवले हौ अपने कॉलोनी में
कॉलोनी क कुल दुलहिनियां एके प्रेसीडेन्ट कहैलीं
एकर कहना कुल मानैली, एकर कहना तुरत करैलीं
कॉलोनी क बुढ़वा बुढ़िया दूरै से परनाम करैलन
भितरैं भीतर सास डरैलें भितरैं भीतर ससुर डरैलन
दिन में सूट, रात में मैक्सी ना घुंघटा ना अंचराजी
देख देख के हंसै पड़ोसी मिसराइन और मिसराजी
अपने एक्कों काम न छूवै कुल पपुवै से करवावैले
पपुओ जान गयल हौ काहे माई डियर बलावैले
छूट गइल पप्पू क बीड़ी ओ चौराहा छूट गयल
छूट गइल मंडली रात क ही ही हा-हा छूट गयल
हरदम अपटूडेट रहैले मेकप दूनो जून करे
रोज बिहाने मलै चिरौंजी गाले पर निबुआ रगरै
पप्पू ओके का छेड़िहैं ऊ खुद छेड़ैले पप्पू के
जइसे फेरै पान पनेरिन ऊ फेरैले पप्पू के
पप्पू के जेबा में एक दिन लभलेटर ऊ पाय गइल
लभलेटर ऊ पाय गइल पप्पू क शामत आय गइल
मुंह पर छींटा मार मार के आधी रात जगावैले
ई लभलेटर केकर हउवै उनहीं से पढवावैले
लभलेटर ऊ देखतै पपुआ पहिले त सोकताय गयल
झपकी जइसे फिर से आइल पपुआ उहैं गोतायगयल
मेहर छींटा मारै फिर फिर पपुआ आंखन खोलत हौ
संकट में कुकुरे क पिल्ला जइसे कूँ कूँ बोलत हौ
जइसे कत्तौं घाव लगल हो हॉफत अउर कराहत हौ
इंतिहान के चिट अस चिठिया मुंह में घोटल चाहतहौं
सहसा हंसल ठठाके पपुआ फिर गुरेर के देखलस
अन्हियारे में एक तीर ऊ खूब साध के मरलस
अच्छा देखा एहर आवा बात सुना तू अइसन हउवै
लभलेटर लीखै क हमरे कालेज में कमटीसन हउवै
हमरो कहना मान मोसमिया रात आज क बीतै दे
सबसे बढ़िया लभलेटर पर पुरस्कार हौ जीतै दे।
++++++++++++++++++++++++++++++

श्री कैलाश गौतम एक परिचय

८ जनवरी १९४४ को डिग्घी, बसिला, वाराणासी वर्तमान में चन्दौली जनपद में जन्में श्री कैलाश गौतम की प्रारम्भिक शिक्षा सदर पुरा इ० कालेज में हुई। वे स्नातक बी०एच०यू० वाराणसी से तथा परास्नातक इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किये। इन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय से बी०एड० की डिग्री हासिल की। सन् १९६७ में इलाहाबाद अकाशवाड़ी, इलाहाबाद में कार्यरत हुए और तब से आज तक इलाहाबाद में ही निवास कर रहे हैं। आपकी साहित्यिक यात्रा १९६२ से “आज” दैनिक पेपर से प्रारम्भ हुई। आप दैनिक जागरण, नवभारत टाईम्स, साप्ताहिक हिन्दुस्तान इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। आपकी सर्वप्रथम कविता संग्रह “सीली माचिस की तीलियॉ, गीत संग्रह “जोड़ा ताल ”, भोजपुरी कविता संग्रह “तीन चौथाई आन्हर”, गीत संग्रह “सिर पर आग”, भोजपुरी गीत संग्रह “राग रंग” अब तक प्रकाशित हो चुकी है। आप भोजपुरी में अपनी रचनाओं लिखकर भोजपुरी को बढ़ावा देते रहे। चिन्ता नये जूते की (व्यंग्य विनोद), चढ़ै न दूजो रंग (उपन्यास) तम्बुओं का शहर (उपन्यास) है।

आपका रेडियो पर धारावाहिक “बड़की भौजी” प्रसारण हुआ जो आज दैनिक पत्र में लगातार दो साल तक धारावाहिक रुप में प्रकाशित होता रहा। आपके लिखे अन्य नाटक गांगू का हेंगा, ठेका गुरु आकाशवाड़ी इलाहाबाद से प्रसारित हो चुके है। आपको उ०प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा राहुल सॉकृत्यायन पुरस्कार, निराला सम्मान, इलाहाबाद, सुमित्रानंदन पंत सम्मान, फरुखाबाद, हुतात्मा सम्मान, कानपुर सहित सैकड़ों सम्मानोपाधियां प्राप्त हो चुकी हैं. इन पुरस्कारों की यात्रा का अन्त ....?

आपके आर्दश लेखक गद्य के प्रेमचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, सुर्यकान्त त्रिपाठी “निराला”, डॉ० धर्मवीर भारती, माखन लाल चर्तुवेदी है। आपने लेखन व जीवन में कोई समझौता नहीं किया। आप इंमरजेंसी में भी लिखते रहे। आपकी रचनाओं का रिकार्ड कैसेट सुल्तानपुर में बाबू आन्हर माई आन्हर पकड़ी गई। फिर भी आपका विश्वास नहीं डगमगाया।

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

भारत की प्राचीन नगरी, भारत की धार्मिक राजधानी, 'प्रयाग' जिसे अब इलाहाबाद के नाम से जाना जाता है कि महिमा को गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी कालजयी कृति रामचरित मानस में भी की हैं.

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ।।
अस तीरथपति देख सुहावा।
सुख सागर रघुबर सुखु पावा।।

तीर्थराज प्रयाग के नाम से भी धार्मिक जनों में सुप्रसिद्ध के नाम के पीछे देव नदी गंगा, यमुना और मानसी सरस्वती का संगम हैं. इन तीनों नदियों के संगम पर स्थित यह नगरी आध्यात्म के सम्मेलन का एक प्राचीन स्थल हैं. इसी नगरी के संगम तट पर प्रतिवर्ष माघ मास अग्रेजी के महीने के अनुसार जनवरी-फरवरी में माघ मेले का आयोजन किया जाता हैं. प्रत्येक छठवें वर्ष अर्द्धकुम्भ, १२वें वर्ष कुम्भ तथा १४४ वर्षो में महाकुम्भ का आयोजन होता है.

इस मेले के आयोजन के पीछे भी एक गाथा छिपी हुई है. प्राचीन अनुश्रुतियों के अनुसार जब देवों और दानवों के मध्य समुद्र मंथन हुआ तो इसमें से अमृत से भरा कलश निकला. इस अमृत कलश को दानवों से बचाने के लिए देवराज इन्द्र ने नारी का रुप ग्रहण करके इस कलश को लेकर उड़ गये. इस कलश से 'अमृत की एक बूंद नासिक, एक उज्जैन और एक एक बूंद हरिद्वार में गिर गयी किन्तु प्रयाग में गंगा, यमुना संगम पर यह सम्पूर्ण कलश ही गिर गया तभी से इन स्थानों पर माघ एवं महाकुम्भ मेलों का आयोजन किया जाता रहा हैं. सम्भवतः इसी कारण शास्त्रों में कहा गया है कि 'गंगे तब दर्शर्नात मुक्तिः' इसी भाव को गोस्वामी तुलसीदास ने निम्न रुप में उलेख किया है-

चवर गंग अरू यमुन तरंगा।
देख होही दारिद दुःख भंगा।।

प्रयाग के बारे में रामचरित मानस में लिखा है-जब श्री राम अपनी भार्या सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ वन गमन कर रहे थे तो राजा दशरथ के महामंत्री सुमंत उन्हें प्रयाग में गंगा के तट तक रथ में छोड़ने आए थे. इसके उपरान्त ही राम ने केवट से विनय करके गंगा नदी पार की और भारद्वाज मुनि के आश्रम में आए. शायद उस स्थान पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय अवस्थित है. यहीं से भगवान राम ने चित्रकूट की ओर प्रस्थान किया. जो प्रयाग से १३७ किमी. की दूरी पर उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की सीमा पर वर्तमान में स्थित है. इलाहाबाद न केवल तीर्थराज रहा है बल्कि राजनीति और साहित्य के पुराधाओं का भी नगर रहा हैं. बदलते समय के साथ यह वक्त बदला अवश्य परन्तु इसने अपने पूर्व स्थापित प्रतिमान नहीं बदले किन्तु नये प्रतिमानों और आदर्शो को अपने आप में समाहित करता गया.

इलाहाबाद का भूगोल

इलाहाबाद उत्तरी अक्षांश २४-२७° एवं २५-४७° के मध्य वाला पूर्वी देशान्तर को ८१-२१° के मध्य स्थित है. इस जिले का कुल क्षेत्रफल ७२६१ वर्ग किमी. हैं. यह दो नदियों गंगा एवं यमुना से घिरा हुआ है. पूर्व से पश्चिम

आखिर प्रयाग नाम ही क्यों?

शाश्व पुराणों के विवरण के अनुसार ब्रह्मा (ब्रह्माण्ड के सृजनकारक) ने इस सृजन के लिए इसी स्थान पर एक प्राकृस्थ यज्ञ का आयोजन किया था. इसी यज्ञ के नाम पर इस नगर का प्रयाग पड़ा. यही कारण है कि प्रयाग को सृष्टि के प्रारम्भ से ही तीर्थ स्थान होने का गौरव प्राप्त है.

सम्प्रति प्रयाग जिस नाम से जाना जाता है इसके पीछे भी एक रोचक कहानी है. सन् 1575 में मुगल साम्राज्य का महान शासक अकबर ने नदी के रास्ते प्रयाग की यात्रा की. वह प्रयाग के सौदर्य पर इतना मुग्ध हो गया कि उसने स्वयं के द्वारा स्थापित नवीन धर्म 'दीन–ए–इलाही' के नाम से इस नगर का नाम इलाहाबाद रख दिया तब से लेकर आज तक इस नगर को इलाहाबाद के नाम से जाना जाता हैं.

+++++++++++++

प्रयाग एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

षोड़श जनपद काल में प्रयाग के निकट यमुना के तट पर स्थित कौशाम्बी नामक स्थान वत्स जनपद की राजधानी थी. आज भी इसी जनपद के अवशेष प्रयाग की धरती पर विद्यमान है.

ई०पू० छठीं शताब्दी में कौशाम्बी अत्यन्त वैभवशाली नगर रहा हैं. स्वयं भगवान बुद्ध कई बार कौशाम्बी में पधारे थे जो १९९७ के पहले तक इलाहाबाद का ही एक भाग था. उस समय यहॉ एक बौद्ध विहार था जिसमें हजारों भिक्षु-भिक्षुणियॉ रहा करती थी. कौशाम्बी जैन धर्म का भी केन्द्र रहा हैं. सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में कौशाम्बी मौर्य साम्राज्य की उप-राजधानी थी. अशोक द्वारा कौशाम्बी में दो प्रस्तर स्तम्भों का निर्माण करवाया गया था. सन् ३२६ ई० में गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने इसी अशोक स्तम्भ पर अपनी उपलब्धियॉ एवं उपदेश अंकित करवाए. प्रयाग में समुद्रगुप्त ने लगातार बारह वर्ष तक यज्ञ करवाया तथा प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) में एक कूप का निर्माण कराया जिसे समुद्र कूप कहा जाता हैं. सम्राट समुद्रगुप्त के पूर्व प्रयाग संगम केवल आश्रम के रुप में रहा, किन्तु इनके समय में १२ वर्ष लगातार यज्ञों के होते रहने के कारण जन-समुदाय का स्थाई ठहराव हुआ, धीरे-धीरे इसने नगर का रुप ले लिया तथा उसी समय से प्रयाग नगर बन गया.

प्रयाग गुप्त शासकों की राजधानी भी रह चुका है. सन् ६४४ ई० में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने प्रयाग का इस प्रकार वर्णन किया है कि 'प्रयाग नगर दो नदियों के घेरे में है, जिसका व्यास लगभग ४ मील का हैं. इस नगर में दा संधाराम तथा बहुत से मन्दिर है. नगर के दक्षिण-पश्चिम में चम्पक वाटिका में एक बड़ा स्तूप हैं जिसे सम्राट अशोक ने बनवाया था. इस स्थान के विषय में मान्यता है कि यहॉ पर प्राण विसर्जन से स्वर्ग की प्राप्ति होती हैं.

मुगल काल के पतन के बाद इस नगर पर मराठों का अधिकार हो गया और अवध राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी लखनऊ बनाई, परन्तु फिर भी इलाहाबाद अवध का एक प्रमुख नगर बना रहा. लखनऊ के नवाब अवध की सम्प्रभुता को बनाए रखने में असमर्थ रहे और अन्ततः १८०१ में अवध को कुशासन के आरोप में ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया गया. कुछ दिनों बाद एक नये राज्य 'यूनाइटेड प्राविन्स ऑफ आगरा एण्ड अवध' का सृजन ब्रिटिश शासको ने किया और इसकी राजधानी इलाहाबाद को बनाया. ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए हुए आन्दोलनों में इलाहाबाद की महती भूमिका रही हैं. १८५७ में हुए स्वाधीनता के प्रथम संग्राम में इलाहाबाद में लियाकत अली ने विद्रोह का नेतृत्व किया. १८५७ के संग्राम के बाद के वर्षो में इलाहाबाद में कांग्रेस के अनेकों अधिवेशन हुए. इलाहाबाद के इतिहास का यही दौर था जब यह नगर धार्मिक तीर्थ के साथ-साथ राजनीति का भी तीर्थ हो गया. इस दौर के इतिहास के साक्षी के रुप में आनन्द भवन, अल्फ्रेड पार्क अवस्थित हैं.

स्वाधीनता प्राप्त होने के उपरान्त भी इलाहाबाद का राजनीतिक महत्व बना रहा और प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरु यही के फूलपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से, धरती पुत्र श्री लाल बहादुर शास्त्री एवं श्री वी.पी.सिंह इलाहाबाद संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों से विजयी हुए. यह नगर पं० जवाहर लाल नेहरु, श्रीमती इन्द्रिरा गांधी, राजीव गांधी, संजय गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी.सिंह का भी जन्म स्थल है.

तक इसका विस्तार ११५ किमी० एवं उत्तर से दक्षिण तक इसका विस्तार ६४ किमी० है. उत्तर में इस जिले की सीमा रायबरेली, जौनपुर तथा प्रतापगढ़ से, दक्षिण में बॉदा एवं रीवां से, पूर्व में मिर्जापुर व भदोही तथा पश्चिम में कौशाम्बी से छूती हैं.

इलाहाबाद का ५२ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र शहरी है. इलाहाबाद के लगभग चार लाख अस्सी हजार हेक्टेयर क्षेत्र पर खेती होती है, सत्रह हजार हेक्टेयर क्षेत्र जंगल हैं.

इलाहाबाद का प्रशासनिक क्षेत्रों में विभाजन किया गया है. इसके अन्तर्गत द्वाबा क्षेत्र में चायल, गंगापार क्षेत्र के अन्तर्गत सोरांव, फूलपुर तथा हडिया तथा यमुनापार क्षेत्र में बारा, करछना तथा मेजा तहसीले आती हैं.

इलाहाबाद में गंगा, यमुना के अलावा बेलन, टोंस, बरना नदियॉ भी बहती हैं.

इलाहाबाद का विस्तार उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में हैं. इस प्रकार मौसम के अनुसार यहॉ की जलवायु में परिवर्तन होता रहता हैं. इस कारण यहॉ वार्षिक तापांतर बहुत पाया जाता है. ग्रीष्म काल में इलाहाबाद का सामान्य तापमान ४५-४६° से० तक तथा शीत काल में यहॉ का तापमान ४° से० २०° तक पाया जाता हैं. यहॉ पर मध्यम श्रेणी की वर्षा १५० से २०० सेमी० वार्षिक होती हैं.

++++++++++++++++++++

इलाहाबाद आने का समय

उष्णकटिबंध में स्थित होने के कारण इलाहाबाद एक विषम जलवायु वाला क्षेत्र है. यहॉ शीतकाल में सामान्य ठण्ड तथा ग्रीष्म ॠतु में अत्यधिक गर्मी व लू चलती है. यहॉ वर्षा औसत होती है. इस प्रकार इलाहाबाद आगमन के लिए अक्टूबर से अप्रैल के मध्य का समय सबसे अच्छा रहता है. वैसे धार्मिक दृष्टिकोण से दिसम्बर और जनवरी का महीना माघ मेला के कारण सबसे अच्छा रहता है.

ठहरने योग्य स्थानः इलाहाबाद में सभी वर्गो के लिए ठहरने हेतु छोटे-बड़े होटल, धर्मशालाएं व गेस्ट हाउस इत्यादि है जिनमें यात्री अपनी सुविधानुसार ठहर सकते है. इनमें से कुछ प्रमुख होटलों तथा धर्मशालाओं का विवरण निम्न है-होटल कान्हाश्याम-स्ट्रेची रोड, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद रीजेन्सी-ताशकन्द मार्ग, होटल हर्ष, होटल सम्राट-एम.जी.मार्ग, सिविल लाईन्स, होटल ग्रैण्ड कॉन्टीनेन्टल, होटल सम्राट, होटल यांत्रिक-सरदार पटेल मार्ग, सिविल लाईन्स, होटल मिलन-लीडर रोड,होटल एन.सी. कॉन्टीनेन्टल-काटजू रोड, होटल एन.सी.- लीडर रोड, होटल वशिष्ठ-जानसेन गंज, होटल अजय इंटरनेशनल, होटल फिनारो, होटल कल्पतरु, होटल कोहिनूर, होटल प्रेसीडेन्सी, होटल-रेजिला आदि

धर्मशालाएंः धार्मिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल होने के कारण यहॉ धर्मशालाएं पर्याप्त मात्रा में है. गंगा यमुना के निकट दारागंज में ही लगभग सात धर्मशालाएं है. चौक-मीरंगज में हलवाई धर्मशाला, हीवेट रोड पर चमेली देवी धर्मशाला, गऊघाट यमुना के निकट में गोकुल दास तेजपाल धर्मशाला, बैरहना में बांगड़ धर्मशाला, सम्मेलन के पास मारवाड़ी धर्मशाला, आदि प्रमुख है.कुछ गेस्ट हाउस भी है- जैसे अपोलो गेस्ट हाउस-मधवापुर,बैरहना, कुंदन गेस्ट हाउस-टैगोर टाउन इत्यादि. अन्य सभी धर्मशालाओं के बारे में जानकारी टूरिस्ट बंग्ला के नाम से विख्यात पर्यटन कार्यालय, ३५ महात्मा गॉधी मार्ग, सिविल लाईन्स बस स्टेशन के निकट से प्राप्त की जा सकती है.

मुख्य बाजारः इलाहाबाद के मुख्य बाजार चौक, कटरा व सिविल लाईन्स है. चौक इलाहाबाद का व्यस्ततृम और पुराना बाजार है. यहॉ से मुख्य वस्तुओं के थोक विक्रय का कार्य होता है. यहॉ मुख्यतः परम्परागत प्रकार की वस्तुएं मिलती है. सिविल लाईन्स शहर का आधुनिकतम बाजार है यहॉ पर खरीददारों की परमपरागत एवं आधुनिक दोनों प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हो सकती है.

खान-पान के लिए इलाहाबाद में कई अच्छे जलपान गृह व होटल हैं. इनमें कान्टीनेन्टल, चाईनीज, होटल कान्हा श्याम, एल्चिको, क्वालिटी, तन्दूर, ब्रिजेज, टूरिस्ट बंग्ला, सहित अनेको होटल रेलवे स्टेशन के पास से लेकर सिविल लाईन्स तक उपलब्ध है जहॉ शाकाहारी/मांसाहारी भोजन मिलते है. गरीव व निम्न मध्यम वर्ग के लिए चलती फिरती कुछ दुकानें जिनमें पूडी/कचौड़ी, चावल, बाटी चोखा मिल सकते है वे मानसरोवर, रेलवे स्टेशन रामबाग और बड़ी स्टेशन, हाईकोर्ट, कचहरी के आसपास मिल सकती है.

महत्वूर्ण स्थलः

भारत के पर्यटन मानचित्र में बहुआयामी स्थान रखने वाला प्रयाग धर्म के साथ ही साथ राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है. यह नगर संगम के अलावा अनेक देवी-देवताओं की कृपा का भागी है. यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति की गरिमा का प्रमुख गवाह है प्रयाग.

पर्यटन के दृष्टिकोण से इधर कुछ प्रयास हुए है. जिनमें युमना बैक रोड पर मिन्टो पार्क के निकट पर्यटन विभाग का भव्य यात्री निवास, केन्द्रीय जल-एवं भूतल परिवहन मंत्रालय द्वारा दर्शनीय केबल आधारित पुल, मैरीन ड्राइव का ड्रीम प्रोजेक्ट, यमुना पुल से सामेश्वर महादेव तक ६किमी० लम्बा सुन्दर भ्रमण पथ, अरैल में एक भव्य

साहित्यिक नगरी प्रयाग

जिस समय इलाहाबाद में राष्ट्रीय राजनीति को दिशा मिल रही थी उन्हीं दिनों इस नगरी में साहित्य के विकास का दौर भी चल रहा था. फिराक गोरखपुरी, हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, सच्चिदानन्द, हीरानन्द वात्सायन अज्ञेय, उपेन्द्र नाथ 'अश्क', लक्ष्मी कांत वर्मा, भगवती चरण वर्मा जैसे साहित्यकारों की कर्मभूमि इलाहाबाद ही रहा हैं और अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला' जी भी इलाहाबाद के निवासी हो गए. सुप्रसिद्ध हास्य कवि कैलाश गौतम भी अपने जीवन के लगभग आधे बंसत को इलाहाबाद में ही जिया.

आज भी साहित्य के क्षेत्र में इलाहाबाद का अपना एक अदभुत स्थान हैं. आज भी यहॉ के वरिष्ठ ग़ज़लकार श्री बुद्धिसेन शर्मा, प्रो. हरिराज सिंह, डॉ० किशोरी लाल, यश मालवीय, अतीक इलाहाबादी, मनौव्वर राना, बाल लेखक डॉ० विनय मालवीय आदि के बदौलत अपनी साहित्यिक पहचान बनाए रखने में सफल हैं.

++++++++++++++++++++

अर्द्ध कुम्भ पर विशेष

त्रिवेणी पुष्प बनकर तैयार है. इसी मार्ग पर साइंस सीटी बनाने का भी प्रस्ताव है.

इलाहाबाद भ्रमण का प्रारम्भ संगम स्नान से करना श्रेयष्कर है. यह इलाहाबाद जक्शन से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर है.

महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलः

संगमः संगम जिसे जिसे तीन नदियों कें संगम के कारण त्रिवेणी के नाम से भी जाना जाता है का दृष्य अत्यंत ही मनोरम है. श्वेत गंगा और हरित यमुना अपने मिलने के स्थान पर स्पष्टतः भेट बनाए रखती है. हिमालय की गोद से निकलकर प्रयाग तक आते-आते गंगा गुम्फित नदी में बदल जाती है परन्तु यमुना से मिलने के उपरान्त इसमें पुनः अथाह जल हो जाता है और जब इसी संगम से आगे बढ़ कर गंगा शिवजी की नगरी काशी में जल से लबालब भरी होती है. यमुना यमुनोत्री की निर्मल धारा लेकर मथुरा में श्री कृष्ण की लीलाओं को मूर्त रुप देकर और आगरे में ताजमहल को नहला कर प्रयाग में गंगा में विलीन हो जाती है.

वैसे तो वर्ष पर्यन्त संगम की महत्ता बरकरार रहती है परन्तु प्रत्येक वर्ष माघ मास में इसकी महत्ता कई गुना बढ़ जाती है. इसी माह यहाँ माघ मेले का आयोजन होता है. माघ मेले की भव्यता सम्राट हर्ष की देन हैं. कल्पवासी संगम के तट पर अस्थायी तौर पर टेण्ट के बनाये हुए घरों में निवास करते है. संगम तट पर स्थापित यह अस्थायी नगर सभी सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहता है. दो महीने का यह स्थायी शहर जिसमें चॉद की चॉदनी में चमकती रेत पर लोहे की चक्र प्लेटों से बनी और एक दूसरे को समकोण पर काटती सड़के, बिजली से रोशन सड़के, पीने के लिए स्वच्छ जल एवं मल-मूत्र के सलीके से बनाए गये शौचालय शामिल होते है, को देखकर किसी आधुनिक सिंधु सभ्यता की याद ताजा कर देते हैं. रात्रिकालीन संगम स्थल का दृश्य तो मन को हर लेता है. बॉध की ऊँचाई से इस मनोरम दृश्य को देखने पर एक अद्भूत शहर का आभास होता है. अर्द्धकुम्भ, कुम्भ पर इसमें और निखार आ जाता है. मेले में सामान्य उपयोग सहित धार्मिक वस्तुओं, किताबें दुकानों पर बिकती है तो गोध ुली बेला से रासलीला, रामलीला तो कहीं प्रवचन देखकर लगता है मानों हम किसी देव लोक में आ गए हों.

लेटे हुए हनुमान जीः संगम के निकट ही बांध पर हनुमान जी की एक लेटी हुई विशाल मूर्ति है और उनके दर्शनार्थ लोगों को सीढ़ियों से उतर कर नीचे जाना पड़ता है. प्रतिमा की भव्यता व विशालता देखते ही बनती है. किले के ठीक बगल में एवं बॉध के ठीक नीचे स्थित इस मन्दिर में प्रति वर्ष गंगाजी, हनुमानजी को स्नान कराने आती है. ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजी शासको ने इस मन्दिर को यहॉ से हटवाने के आदेश दिये किन्तु जैसे-जैसे मूर्ति को हटाने के लिए खुदाई की जाने लगी वैसे-वैसे मूर्ति बाहर आने के बजाए अन्दर धसती गयी. मन्दिर के गड्ढे में होने का यही कारण हैं.

सरस्वती कूपः किले के भीतर स्थित इस पवित्र कूप के विषय में विश्वास किया जाता है कि यही अदृश्य सरस्वती नदी का स्रोत है.

पातालपुरी मन्दिरः किले के अन्दर यह मन्दिर भूगर्भ में स्थित है और अक्षयवट इस मन्दिर के अन्दर ही हैं. यह मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है.ऐसी मान्यता है कि भगवान राम ने इस मन्दिर की यात्रा की थी. ६३४ ई० में प्रयाग की यात्रा करने वाले चीनी यात्री ह्वेन सांग भी इस मन्दिर के बारे में लिखा हैं.

अक्षयवट (अमरवृक्ष)-इसकी यह यह विशेषता है कि इस वृक्ष का कभी नाश नहीं होता. ऐसी मान्यता है कि प्रलय काल में भगवान विष्णु इस वृक्ष के ऊपर शयन करते है और पुनः सृष्टि की रचना करते हैं. इसलिए इसे अक्षयवट कहते हैं. इस बरगद के वृक्ष का धार्मिक महत्व अधिक है. पातालपुरी मंदिर के अंदर स्थित यह वृक्ष अत्यंत प्राचीन है. ह्वेनसांग ने भी इसके बारे में लिखा है. यह वृक्ष ध ार्मिक मान्यता के साथ ही साथ प्राचीन भारत की एक धरोहर भी हैं. शायद यह विश्व के प्राचीनतम वृक्षो में से एक है. यह वृक्ष एक गहरे ताखे पर खड़ा है और विश्वास किया जाता है कि इसकी जड़ें त्रिवेणी को जाती हैं. लेकिन वर्तमान में अक्षय वट की शाखा का ही दर्शन किया जा सकता है. मूल अक्षय वट आम आदमी की पहूँच के बाहर है.

शंकर विमान मण्डपमःगंगा के तट पर स्थित यह आधुनिक चार मंजिलों वाला भारत की द्रविड़ शैली में निर्मित मंन्दिर हैं और इसके नागर पर खूबसूरत नक्कासी है. १३० फीट ऊँचें इस शंकर विमान मण्डपम की प्रत्येक मंजिल पर अलग-अलग देवताओं का वास स्थान बनाया गया हैं. यहॉ स्थापित मूर्तिया कुमारिल भट्ट, जगद्गुरु शंकराचार्य, कामाक्षी देवी, तिरुपति बालाजी, १०८ विष्णु, योगशास्त्र, सहस्त्रयोग लिंग और १०८ शिव की है. इसके अन्दर की दीवारों

पर रामायण के विभिन्न दृश्यों को बड़ें ही सुरुचिपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया हैं.

मनकामेश्वर मंदिरः यमुना के तट पर किले ने निकट स्थित इस प्राचीन मनकामेश्वर मंदिर के चबूतरे से यमुना का दृश्य अत्यन्त ही मनोरम दिखता है. ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में शिव भगवान के दर्शन करने से व्यक्ति की मनोकामनॉए पूरी हो जाती है.इस मंदिर में प्रतिदिन होने वाला श्रृंगार एवं दिव्य आरती देखने लायक होती हैं.

नागवासुकी मन्दिरः नगर के दारागंज मोहल्ले में अन्तिम छोर पर स्थित यह मंदिर नागपुर के भोसले मराठों द्वारा बनवाया गया था. यह मंदिर गंगा नदी के किनारे ऊँचाई पर स्थित हैं. नाग पंचमी के दिन इस मन्दिर में विशेष पूजा अर्चना की जाती है एवं भव्य मेले का आयोजन होता है.

शिवकुटीः गंगा जी के बगल में स्थित यह एक अत्यन्त रमणीय स्थल हैं. हरियाली से भरपूर इस मन्दिर की महत्ता सावन माह में भव्य मेले के आयोजन से और भी बढ़ जाती है. इसके निकट ही एक नारायणी आश्रम है.

भारद्वाज आश्रम एवं मन्दिरः आनन्द भवन के निकट कर्नल गंज में स्थित एक मंदिर है. यही भगवान श्रीराम ने त्रेतायुग में गंगा पार करके महर्षि भारद्वाज आश्रम में विश्राम किया था तथा उनसे कुछ शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया था. तत्कालीन गंगा का प्रवाह इसके साथ था. बाद में अकबर द्वारा बक्शी एवं बेनी बांध बनवाने के कारण गंगा का प्रवाह परिवर्तित हो गया. इसमें भगवान शिव एवं देवी काली की प्रतिमाओं के साथ ही महर्षि भारद्वाज की प्रतिमा भी स्थापित हैं.

हनुमत निकेतनः सिविल लाईन्स बस अड्डे के निकट एक आधुनिक मंदिर है जो मुख्य रुप से हनुमान जी को समर्पित है. इस मंन्दिर में श्रीराम, सीता, लक्ष्मण एवं देवी दुर्गा की प्रतिमांए भी स्थापित हैं. इसी परिसर में एक अन्य भवन षोड्ण लिङग प्रतिमाएं, विष्णु, कार्तिकेय, देवी सरस्वती एवं देवी लक्ष्मी की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं. परिसर के एक भाग में व्यायामशाला तथा आधुनिक शरीर शौष्ठवशाला भी हैं.

वेणी माधव मंदिरः संगम से उत्तर गंगा के पश्चिमी तट पर दारागंज मुहल्ले में स्थित यह मंदिर पौराणिक महत्वपूर्ण मंदिर हैं. इसमें भगवान वेणी माधव विष्णु की मूर्ति प्रतिष्ठित हैं. इस मन्दिर के जीर्णोद्वार के पश्चात इसका बाहरी भाग आधुनिक सा प्रतीत होने लगा हैं.

अलोपीदेवी मंदिरः दारागंज से शहर की ओर बढ़ने पर जी.टी.रोड के बगल में यह मंदिर स्थित हैं. इस मंदिर में शक्ति स्वरुपा देवी–अलोप शंकरी प्रतिष्ठित हैं. प्रत्येक नवरात्रि को यहॉ दर्शन का विशेष महत्व हैं एवं ज्येष्ठ एवं शारदीय नवरात्र में यहॉ मेला लगता हैं.

कल्याणी देवी मंदिरः शक्ति स्थलों में एक और महत्वपूर्ण स्थल देवी कल्याणी दुर्गा की स्थापना नगर के अतरसुइया मुहल्ले में है. यहॉ भी दोनों नवरात्रों में मेला लगता है और देवी का विशेष श्रृंगार एवं आरती होती हैं.

लाक्षा गृहः इलाहाबाद से लगभग ३८ किमी. पूर्व हंडिया तहसील से ५ किमी० दक्षिण में वर्तमान में लाक्षागिरि के नाम से जाना जाने वाला यह स्थान महाभारत कालीन हैं. महाभारत में पाण्डवों को जलाकर मार डालने के उद्देश्य से कौरवों ने यहॉ लाख का एक महल बनवाया था किन्तु विदुर और पाण्डवों की सर्तकता से वे सफल न हो सके. यहॉ पुरातत्व विभाग के खनन में मृण्भूतियॉ, सुराहियों के टुकड़े, प्रस्तर प्रतिमाएँ और कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसके आधार पर इस स्थान को तक्षशिला और कौशाम्बी के समकालीन माना गया हैं.

पड़िलन महादेवः इलाहाबाद से उत्तर पश्चिम फाफामऊ से करीब १० किमी० जैतवारडीह नामक स्थान हैं. मान्यता है कि पाण्डवों ने अपने वनवास काल का कुछ समय यहॉ व्यतीत किया था. यहॉ मण्डलेश्वर नाथ का मंदिर है जो पंडिला महादेव के नाम से विख्यात हैं. यह मंदिर प्रयाग की पंचकोशी परि. क्रमा में उत्तर का पड़ाव हैं. यहॉ फाल्गुन बदी तेरस को एक विशाल मेले का भी आयोजन होता हैं. यह भी विश्वास किया जाता है कि भीम ने यहीं पर राक्षस हिडिम्ब को मारकर उसकी बहन हिडिम्बा से विवाह किया था एवं मण्डेश्वर नाथ (पंडलेश्वर महादेव) की स्थापना की थी.

कौशाम्बीः इलाहाबाद से ६० किमी० पश्चिम में स्थित यह नगर बौद्ध काल के १६ महाजनपदों में से एक वत्स की राजधानी था. यह यमुना नदी के तट पर स्थित है. अपने उत्कर्ष के समय यह बौद्ध और जैन धर्म का एक बड़ा केन्द्र था. उदयन यहॉ का प्रतापी शासक था. यहॉ पर ५ प्रसिद्ध प्राचीन स्मारकों के अवशेष प्राप्त हुए हैं ये स्मारक है अशोक स्तम्भ, मौर्य समय के आवासीय भवन, घोषिताराम का बिहार एवं महल का प्रागंण.

अर्द्धकुम्भ पर विशेष

कौशाम्बी की प्राचीन ईंटों की आस-पास के क्षेत्र के निवासियों ने अपने घर बनाने में भी इस्तेमाल किया. वर्षा के जल बहाव से होने वाले कटाव के कारण इस नगर के अवशेषों पर बुरा असर पड़ा हैं. यहॉ पर १६१६ में निर्मित एक दिगम्बर जैन मन्दिर भी हैं.

श्रृंगवेरपुरः इलाहाबाद से ४० किमी० दूर स्थित इस नगर का शासक निषाद राज था. यहॉ श्रृंगी ऋषि का एक मन्दिर भी है. गंगा के तट पर स्थित इस नगर में एक रामचौरा नामक चबूतरा हैं. ऐसा विश्वास किया जाता है कि श्री राम जब वनवास को जा रहे थे तो निषाद राज ने इसी चबूतरे पर श्री राम के चरण धोए थे.

कड़ाः मुगलों की प्रान्तीय राजधानी व मुगल काल में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त इलाहाबाद से ६६ किमी० दूर स्थित कड़ा एक धार्मिक स्थल के रुप में अधिक विख्यात हैं. यहॉ कड़ा देवी अथवा शीतला देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है. यहॉ संत मूलक की समाधि भी हैं.

प्रतिष्ठानपुरः सम्प्रति झूसी के नाम से विख्यात इस स्थान को प्राचीन काल में प्रतिष्ठानपुर के नाम से जाना जाता था गंगा के किनारे इस स्थान पर शिव मंन्दिर, समुद्र, कूप एवं हंस तीर्थ मन्दिर स्थित हैं.

अरैलः संगम के दक्षिण अरैल नामक गॉव प्राचीन काल में अलर्कपुरी के नाम से विख्यात था. इसे काशी के राजा अलर्क ने बसाया था जिसने ब्राहमणों को अपनी ऑखें दान कर दी थीं.

बल्लभाचार्य द्वारा स्थापित वैष्णव सम्प्रदाय की एक प्रसिद्ध गद्दी यहॉ है. यहॉ जयपुर नरेश महाराज मानसिंह का एक १६७४ ई. का प्रस्तर लेख भी हैं.

भीटाः इलाहाबाद से लगभग २४ किमी० पश्चिम में यह एक पुरातात्विक आकर्षण हैं. प्राचीन काल में विटमय पट्टन और कालान्तर में विछग्राम नाम से जाना जाने वाला यह स्थान राजा उदयन की राजधानी था जो महावीर तथा बुद्ध का समकालीन था. जनरल कनिंघम ने १८७२ ई० में यहॉ खुदाई कराके एक प्राचीन नगर गढ़ तथा कई शिलालेख प्राप्त किए. जिसमें बुद्ध प्रतिमा पर ५०६ ई० का शिलालेख भी हैं. जिसमें लिखा है कि इस बुद्ध प्रतिमा को भिक्षु मित्र ने कुमार संभव के शासन काल संवत् १२६ में प्रतिष्ठित किया था.

खैरा गढ़ः इलाहाबाद से लगभग ४० किमी० पूर्व मेजा रोड रेलवे स्टेशन से पश्चिम, टोंस नदी के पूर्वी तट पर एक विशाल गढ़ है जिसका कुछ भाग टोंस ने आत्मसात कर लिया है. यह गढ़ मॉडा राज्य के अधीन है और इसकी देखरेख भारतीय पुरातत्व विभाग करता हैं.

सीतामढ़ीः इलाहाबाद से लगभग ६५ किमी. दूर वाराणसी जाने वाली जी. टी.रोड पर स्थित सीतामढ़ी के बारे में मान्यता है कि सीताजी द्वारा इसी स्थान पर जल समाधि ली गई थी. इस स्थान का विकास लॉयड स्टील समूह द्वारा व्यक्तिगत रुप से किया जा रहा है. यहॉ पर जिले का एकलौता सीता जी मन्दिर है. यहॉ मन्दिर के चारो ओर एक झील भी है जिसमें नौका बिहार का आनन्द लिया जा सकता है. यहॉ रात्रि विश्राम व भोजन की भी उत्तम व्यवस्था है.

पफसोजीः यहॉ प्रभास क्षेत्र नामक एक पहाड़ी है, जिस पर महाप्रभु जी से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध मन्दिर है. जैन तीर्थ के रुप में इस स्थान की विशेष मान्यता है. यह इलाहबाद मंडल के कौशाम्बी जिले में स्थित हैं.

तीर्थकर ऋषभदेव तपस्थलीः इलाहाबाद से वाराणसी जाने जी.टी. रोड पर लगभग ८ किमी० दूर अन्दावॉ में स्थित यह एक नवनिर्मित जैन तीर्थ है. ऐसी मान्यता है कि यहीं पर जैन तीर्थकर ऋषभदेव ने साधना द्वारा अपने प्राण त्यागे थे. यह मन्दिर बहुत ही खूबसूरत तरीके से कैलाश पर्वत के मानचित्र पर बनाया गया है.

गढ़वाः इलाहाबाद से मुम्बई रेलमार्ग पर लगभग २० किमी० दूर शंकरगढ़ हैं. शंकरगढ़ से लगभग २० किमी० दक्षिण में एक गॉव बरगढ़ है. जो पहले भटगढ़ के नाम से जाना जाता था. यहीं चार बुर्जो वाला एक गढ़ है जिसे सम्प्रति गढ़वा कहा जाता है. यहॉ एक झील भी है जिसे गढ़वा ताल कहते हैं. इसके आस-पास उत्खनन में अनेक मन्दिर एवं देव मूर्तिया प्राप्त हुई है. यहॉ गुप्त सम्राटों के अभिलेख प्राप्त हुए है, जिनमें ब्राहमणों को दीनार (स्वर्ण मुद्राएं) दान किए जाने का उल्लेख हैं. गढ़ में विष्णु के दशावतारों का एक मन्दिर है.

आल सेण्ट्स कैथेड्रिल(चर्च)ः शहर के सिविल लाइन्स क्षेत्र में स्थित यह चर्च पत्थर गिरिजा के नाम से प्रसिद्ध हैं. इस चर्च को देखने से प्रतीत होता है कि मानो किसी रोमन साम्राज्य का राजगृह देख रहे हों. १८७६ में बन कर तैयार हुए इस चर्च का नक्शा सुप्रसिद्ध अंग्रेज वास्तुविद विलियम इमरसन ने तैयार किया था. इसी वास्तुविद ने कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल का भी नक्शा बनाया था. यह चर्च एक चौराहे के बीचों-बीच स्थित है और इसका प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है. चर्च के भीतर खिड़कियों पर रंगीन शीशे की शानदार नक्कासी है.

अन्य दार्शनिक स्थल

मिण्टों पार्क (मदन मोहन मालवीय पार्क)ः १८५७ के गदर को अंग्रेजों द्वारा कुचलने के बाद जब शान्ति स्थापित हो गयी तो १ नवम्बर १८५८ में इलाहाबाद में लार्ड केनिंग ने एक दरबार का आयोजन किया जिसमें महारानी का घोषणा पत्र पढ़ा गया. १९११ में इसी स्थान पर लार्ड मिण्टों द्वारा एक पार्क की स्थापना के लिए प्रयास किया गया. इस पार्क की स्थापना के लगभग सवा लाख रुपये की सहयोग राशि एकत्र की गयी और यमुना के सुन्दर तट पर यह पार्क स्थापित हुआ. इस पार्क में एक घोषणा स्तम्भ स्थापित किया गया. यह स्तम्भ सफेद संगमरमर का है और इसके शीर्ष पर अशोक चिन्ह (चार शेर) बना है. लार्ड मिण्टों के नाम पर ही इसका नाम मिण्टों पार्क रखा गया. बाद में इसका नाम बदलकर मदन मोहन मालवीय पार्क कर दिया गया.

जवाहर नक्षत्र शालाः पं. जवाहरलाल नेहरु विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रगति में अत्यधिक रुचि रखने वाले व्यक्ति थे. अतः उन्हीं की याद में यहॉ सरकार द्वारा एक प्लेनेटोरियम (नक्षत्रशाला) का निर्माण करवाया गया.

तारो, ग्रहों एवं नक्षत्रों से सम्बन्धित मूल-भूत ज्ञान के लिए यह एक ज्ञानबर्द्धक स्थान हैं. इसमें टिकट के माध्यम से प्रवेश मिलता है. इसका एक शो सवा घण्टे का होता हैं. जो ११ बजे शुरु होकर सायं ५ बजे तक चलता है.

पब्लिक लाइब्रेरीः कम्पनी बाग के अन्दर एक पब्लिक लाइब्रेरी हैं. वैसे तो यह एक सामान्य इमारत है लेकिन इसके प्रवेश द्वार पर कोरीडोरा में बड़े खम्भों पर बहुत ही सुन्दर रोमन नक्कासी हैं.

इलाहाबाद संग्रहालयः कम्पनी बाग के अन्दर सन् १९३१ में एक संग्रहालय का निर्माण करवाया गया था. इस संग्रहालय में भारत के प्राचीन इतिहास से सम्बन्धित अनेक वस्तुएं रक्खी हुई है. इन वस्तुओं में कौशाम्बी के भी अनेक अवशेष संग्रहीत है. कौशाम्बी से प्राप्त बुद्ध की मुर्तिया भी इसमें संरक्षित है. इस संग्रहालय में प्राचीन सिक्कों का एक अनमोल खजाना है. पंचमार्क सिक्के, ताबें के सिक्के, कुषाणो तथा गुप्त शासकों द्वारा प्राप्त सिक्कों के अतिरिक्त यहॉ कुछ मुगलकालीन सिक्के भी हैं. यहॉ मुगलकाल की अनेक पेंटिग भी संरक्षित है. इसके अतिरिक्त यहॉ पर एक रुसी चित्रकार द्वारा निर्मित अत्यन्त सुन्दर पेंटिग भी रक्खी हुई है. इलाहाबाद से सम्बघित कुछ लेखकों यथा महादेवी वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा आदि के कुछ हस्तलिखित अभिलेख भी इस संग्रहालय में सुरक्षित हैं. इन सबसे बढ़ कर यहॉ पर महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की वह पिस्तौल भी रक्खी है जिससे उन्होंने अंग्रेज सिपाहियों का मुकाबला किया था. संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियों के प्रतिरुप बिकते भी हैं.

सुमित्रानन्दन पन्त बाल उद्यान(हाथी पार्क)ः चन्द्रशेखर आजाद पार्क के पास यह उद्यान हैं. इसमें पत्थर का एक बड़ा हाथी बच्चों के मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसके कारण यह हाथी पार्क के नाम से भी जाना जाता है. इसके एक तरफ नाजरेथ अस्पताल और सेंट मेरी विद्यालय है एवं सामने मदन मोहन मालवीय हिन्दू छात्रावास है. यह स्थान बच्चों के घूमने फिरने के लिए पिकनिक स्थल हैं.

स्वामी रामकृष्ण मठ एवं मिशनः सन् १९०० में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने एक अन्य शिष्य स्वामी विज्ञानानंद के द्वारा शहर के मुट्ठीगंज मुहल्ले में इस मठ की आधार शिला रक्खी थी. यह मठ एवं मिशन मानव सेवा में संलग्न है. इसके द्वारा एक पुस्ताकलय एवं वाचनालय, एक होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक दवाखाना संचालित हैं.

अर्द्ध कुम्भ पर विशेष

इलाहाबाद में यातायात के साधन

इलाहाबाद सड़क व रेलमार्ग से देश लगभग सभी प्रमुख शहरों से सीधे जुड़ा हुआ हैं. यहाँ अस्थायी तौर पर वायुमार्ग भी उपलब्ध हैं. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या २ जिसे जी०टी०रोड के नाम से भी जाना जाता है, इलाहाबाद नगर के बीचोबीच से होकर गुजरती हैं. इस प्रकार यह नगर दो प्रमुख महानगरों दिल्ली एवं कलकत्ता से सीधे सड़क मार्ग से जुड़ा हैं. इलाहाबाद से कुछ महत्वपूर्ण स्थलों की दूरी इस निम्न है-अयोध्या-१६७ किमी०, चित्रकूट-१३७ किमी० आगरा ४३३ किमी०, अहमदाबाद-१२०७ किमी०, दिल्ली-६४३ किमी०, भोपाल ६८० किमी०, मुम्बई १४४४ किमी० कोलकत्ता ७६६ किमी०, हैदराबाद १०८० किमी०, जयपुर-६७३ किमी० झांसी-३७५ किमी०, लखनऊ-२०४ किमी०, चेन्नई-१७६० किमी०, नागपुर-६१८ किमी०, पटना-३६८ किमी०, तिरुवनतंपुरम् २४१३ किमी०, उदयपुर-६५६ किमी०, वाराणसी १२० किमी०, खजुराहो-२६४ किमी०, लुम्बिनी ४०६ किमी०, कानपुर २०२ किमी०।

इलाहाबाद में राज्य परिवहन निगम के तीन डिपो-बस अड़डा है-

१.सिविल लाईन्स बस अड्डा-यहाँ से तमकुही रोड, आजमगढ़, सोनौली, बलिया, मऊ, पड़रौना, बादशाहपुर, बहराइच, शाहगंज, डेरवा, बस्ती, सैफाबाद, महाराजगंज, बहराइच, गोण्डा, सॉगीपुर, कुण्डा, बरेली, भदोही, गोपीगंज, हडिया, लखनऊ, फैजाबाद, गोरखपुर, जौनपुर, वाराणसी, प्रतापगढ़, रायबरेली, फैजाबाद, सुल्तापुर आदि के लिए बसे उपलब्ध हैं.

२.लीडर रोड बस अड़डा-दिल्ली, आगरा, झॉसी, कानपुर बरेली, सोनारी, मूरतगंज, भरवारी, फतेहपुर, पभोसा, हलद्वानी, मुजफ्फरपुर, फर्रुखाबाद, काठगोदाम आदि.

३.जीरो रोड बस अड़डा-यहाँ से मिर्जापुर, सोनभद्र, सागर, शक्तिनगर, रीवां, कर्वी, बरोखर, भारतगंज, शंकरगढ़, चाकघाट, नागपुर, शहडोल, अम्बिकापुर, पन्ना, जबलपुर, भोपाल, सतना, बिलासपुर, सीधी, रायपुर, मैहर, मेजा, मांडा आदि

रेलवे-सड़क मार्ग की ही भॉति इलाहाबाद में रेल सेवाओं का भी पर्याप्त विस्तार हुआ है. इलाहाबाद से देश के लगभग सभी राज्यों प्रमुख शहरों के लिए सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध ा हैं.

इलाहाबाद में चार रेलवे स्टेशन मुख्य है-

जक्शन(बड़ी स्टेशन), प्रयाग, रामबाग(इलाहाबाद सीटी) और नैनी जक्शन.

जल मार्गः यहॉ जलमार्ग का विकास अभी प्रारम्भिक अवस्था में है. राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या एक(इलाहाबाद-उ०प्र० से हल्दिया-पं० बंगाल) का विकास किया जा रहा है तथा इस पर प्रायोगिक तौर पर यातायात प्रारम्भ हो गया है. इसके शीघ्र विकसित होने की संभावना हैं.

वायुसेवाः वायुसेवा का विकास इलाहाबाद में पर्याप्त रुप से नहीं हो पाया है. इसके लिए वाराणसी-बाबतपुर हवाई अड्डा, लखनऊ-अमौसी हवाई अड्डा तथा कानपुर-चकेरी जाना ज्यादा सुविधा जनक है.

वाराणसी, कानपुर से पर्याप्त मात्रा में बस और ट्रेन के साधन है. लखनऊ से ट्रेने कम लेकिन बस का साधन पर्याप्त मात्रा में हैं. उपरोक्त तीनों स्थानों से उत्तर प्रदेश परिवहन साध ाारण से लेकर वातानुकुलित लक्सरी बसों का साधन.

स्थानीय यातायातः स्थानीय स्तर भी पर्याप्त मात्रा में महानगरीय बस सेवा, टैक्सी, ऑटो रिक्शा, ट्रेवेल्स कम्पनियों के माध्यम से मारुति वैन, मारुति कार, टाटा सुमो, सफारी, इंडिका, स्कार्पियो, क्वालिस सहित लगभग सभी प्रकार की साधारण से लेकर लक्जरी तक उपलब्ध हैं. तांगा, रिक्शा भी यहाँ पर्याप्त मात्रा में स्थानीय यातायात के लिए उपलब्ध है.

वृक्ष लगाओं, पेड़ बचाओ

नववर्ष २००७ पर सभी पाठको को

हार्दिक बधाई

दाऊजी

जी.पी.एफ.सोसायटी

चुटकूले सुनने के लिए सम्पर्क करें

आनन्द कुमार सोनी

मो० ६३०५०३०६४४, ६६१६१६६४७३

समयः प्रातः ८ से १० सायंः ७ से ६

बूढ़ों के साथ लोग कहां तक वफा करें, लेकिन न मौत आए, तो बूढ़े भी क्या करें

सुधीर विद्यार्थी

बुढ़ापे तक पार्टी के लिए मरते-खपते रहे, उन्हें अब दुत्कारा जा रहा हैं.

बुढ़ापा वैसे भी बड़ी बीमारी है ऊपर से ताना यह कि घर के बाहर बरोठे में बैठों और चौकीदारी करों. हर जगह युवा वर्ग को लाने की बात की जाने लगी हैं. गोया जिंदगी भर मैंने कुछ किया ही न हों.

एक जमानें में राजनीति में वयोवृद्ध होने का अपना सुख था. लेकिन अब राजनीति के लिए ऐसे उम्रदराज लोग बोझ होने लगे हैं. पार्टियों में उनके रिटायरमेंट की चर्चा चल पड़ी हैं. राजनीति न हुई, सरकारी नौकरी हो गई कि साठ के होते हीं पेंशन लों और घर जाओं. महात्मा गांधी से किसी ने नहीं कहा था कि तुम बूढ़ें हो, इसलिए नमक मत बनाओं, सत्याग्रह न करो, जेल न जाओं. अब सब नौजवानों को करने दो.

लेकिन आज राजनीति में लोग बुढ़ापे को गिरी नजरों से देखने लगे हैं.

मैंने पूरी जवानी पार्टी में कार्यकर्ता बनकर गुजार दी. अब बाल सफेद हुए हैं, तो युवा वर्ग को आगे लाने की बात की जाने लगी हैं. गोया जिंदगी भर मैंने कुछ किया ही न हो. जैसे सारे बाल धूप में ही सफेद हो गए हों. बुढ़ापा वैसे भी बड़ी बीमारी है ऊपर से ताना यह कि घर के बाहर बरोठे में बैठों और चौकीदारी करों. बहुत राजनीति कर ली. इस उम्र में आराम जरूरी हैं.

हमारे देश की परंपरा में बुजुर्गो को हमेशा आदर और ओहदा मिला है. बुरा हो मार्क्सवादी ज्योति बसु और हरकिशन सिंह सुरजीत का, जिन्होंने अपनी पार्टी में पद छोड़कर दूसरी पार्टियों में बहस छेड़ दी है कि बूढ़े लोगों को नेतृत्व से हट जाना चाहिए. आरएसएस के केसी सुदर्शन भी कम्युनिस्टों की इसी लाइन पर चल पड़े और वाजपेयी तथा आडवाणी को हटने की सलाह दे डाली.

अब नौजवान नेतृत्व करेंगे और बूढ़ें घर में बैठकर भाड़ झोकेगें. जो लोग कहा जा रहा है कि दरिया के किनारे बैठकर लहरें गिनों. जरुरी हुआ, तो सलाह ले लेगें, लेकिन पीएम और मंत्री तो कल के छोकरे ही बनेंगें. हमें बस टुकुर-टुकुर ताकना हैं. हमने क्या राजनीति इसी दिन के लिए की थी कि बूढ़ें होने पर ठोकरें खाएं? बाहर टूटी खटिया पर पड़े-पड़ें कुढ़ें और मर जाएं? इस तरह सड़ गलकर मिट्टी में मिलना होता, तो राजनीति में क्यों आते? पता नहीं था कि पॉलिटिक्स में ससुरे ये दिन भी देखने पड़ेगें. बिजनेस और वकालत में आदमी पूरी उम्र रिटायर नहीं होता. बल्कि पुराना बिजनेसमैंन और वकील ज्यादा खुर्राट और दमदार हो जाता हैं. सुदर्शन की वाणी सुनकर अटल और आडवाणी, दोनों हैरत में हैं. अटल तो खैर पीएम की कुरसी तक पहुंच गए. लेकिन बेचारे आडवाणी का सपना कैसें पूरा हो? भाजपा की काठ की हांडी अब दोबारा चढ़ेगी, इसकी उम्मीद किसी को नहीं हैं.

इन दिनों चंद्रशेखर और बाल ठाकरे भी चिंतित है. लेकिन उनकी पार्टी में हैं ही कौन, जो कह सके कि बहुत चढ़ लिए पालकी पर. अब उतरो और घर बैठों. विश्वनाथ प्रताप सिंह, भजनलाल, करूणानिधि, एन.डी.तिवारी और प्रकाश सिंह बादल की भी हालत कुछ अलग नहीं हैं. किसी शायर ने बूढ़ों की इसी पीड़ा को कुछ इस तरह व्यक्त किया है- बूढ़ों के साथ लोग कहां तक वफा करें, लेकिन मौत न आए, तो बूढ़ें भी क्या करें.

ओस की बूँदों का दर्द

जाड़ें पाले की अँधेरी रात में
घास पर चुपचाप बैठी
थरथराती कॉपती
उन ओस की बूँदों का दर्द
कौन जाने,
कौन समझे
जो घने जंगल में आकर घिर गई
जिनके तन को
सर्द बर्फीली हवा ने
छू के पत्थर कर दिया

शरीफ़ क़ुरेशी, फतेहगढ़

++++++++++++++++++++++

दोहे

डारी-डारी बगिया में, देख झूलते आम
सजनी आई याद तेरी, क्या सुबह क्या शाम।
ग़म को मेरे बॉटने आये ना जब मीत
अश्क ढल गये सुर में, बन कोई गीत।
धनभाई का देखकर, जलता क्यों हैं यार
लतीफ 'आरजू' मत कर, धन से इतना प्यार।
आजादी है भारत की, जनता का त्योहार।
दिया शहीदों ने हमको, खुशी खुशी उपहार।

लतीफ 'आरजू' कोहीरी, आन्ध्र प्रदेश

"भाई जिन्दगी जिन्दा रहने का नाम नहीं. जिन्दा रहने के लिए एक अदद जिन्दगी की आवश्यकता पड़ती है."

"मैं कुछ समझा नहीं बड़े बाबू."

"जल्दी समझ जाओं भाई वर्ना जिन्दगी की मियाद बढ़ सकती है और तब तकलीफों के अम्बार लग सकते हैं."

"कुछ-कुछ तो समझ आ रहा है बड़े बाबू. चेक कर लीजिए. तकलीफ कब तक दूर हो जायेगी."

"यही परसों शाम तक. पर दवा कड़ुवी होगी, इन्जेक्शन ३० मीलीलीटर सीरींज से लगेगा."

"ठीक है बड़े बाबू. इलाज शुरु कीजिये"

और राम रतन की पेंट तीन हजार रुपयों से ढ़ीली हो गई. काम तो होना था, हो गया. बड़ें बाबू शाम को इसमें से १०००/- रुपयें अपने साथ घर ले गये. शेष अपने अधीनस्थों में बराबर-बराबर बंटवा दिया. यह इस दफ्तर अलिखा, अघोषित नियम था कि हफ्तें में एक बार शनिवार की शाम को शाखा की कुल कमाई का पन्द्रह प्रतिशत शाखा प्रभारी को बड़े बाबू के हिस्सें में से मिलता था इसलिये बड़े बाबू एक-तिहाई अपने पास रख लेते थे. शेष ईमानदारी से उनके अधीनस्थों में बंट जाता. बड़े बाबू से मुलाकात कराने का अतिभार सुक्खीलाल को बदस्तूर बीस रुपये प्रति मुलाकाती मिलता था. जो लोग दफ्तर के पहले या बाद में या छुट्टियों में बड़े बाबू से घर पर मिलते थे उसका आधा बड़े बाबू रखते थे. शेष नियमतः अधीनस्थों में बंट जाता था. शाखा प्रभारी को भी इसका पन्द्रह प्रतिशत मिलता था.

बड़े बाबू के बेटी की शादी तय हो गई थी. कुछ तो थे. कुछ का इन्तज़ाम करना था. पेशानी में तनाव की रेखा

बड़े बाबू

✍मदन मोहन वर्मा, गाजियाबाद

तो थी पर बड़े बाबू भगवान पर भरोसा करते थे इसलिये आवश्वस्त भी थे.

दफ्तर में अभी-अभी बैठे ही थे बड़े बाबू कि एक सज्जन हड़बड़ाए से उनके पास आये और पसीना पोंछते हुए धम्म से बड़े बाबू के सामने कुर्सी पर बैठ गये. बड़े बाबू ध्यानावस्था में थे. रोज़ दफ्तर की कुर्सी पर बैठ कर शिवजी की आराधना करते समय पांच मिनट तक किसी से भी मुखातिब नहीं होते. यहां तक कि अपने अफसर से भी नहीं.

जब उन्होंने आंखे खोली तो तोंदुल सेठ जी बैठे मिले. बड़े बाबू ने उन्हें देख कर एक बार फिर ऑखें मूंद ली भगवान शिव को याद करने के लिये.

"कहिये सेठ जी कैसे तकलीफ की?"

"क्या बताऊं बड़े बाबू अमावस्या की अंधेरी रात छटने को नहीं आ रही है"

"इस इक्कीसवीं सदी में अमावस्या की रात में अंधेरा कहां होता है सेठ जी. प्रकाश ही प्रकाश विखरा है चारों ओर उन्हें घेर कर सिमटा लेने की कला आनी चाहिये. अमावस्या की रात में अंधेरा छॅटाने के लिए."

"समझा. आप प्रकाश फैलाइये बड़े बाबू मैं उन्हें अपने दोनों हाथों से समेट कर अंधेरा का नामोनिशान मिटा दूंगा"

"सेठ जी"

"बोलिये बड़े बाबू."

"सेठ जी बिटिया की शादी है. छः जनवरी को. आपे तो शहर के पुराने रईस और बड़े व्यावसायियों में से एक है. आपके सहारे ही बिटिया का विवाह निश्चित किया."

"हुकुम कीजिये बड़े बाबू."

"हुकुम कीजिये क्या सेठ जी. लगभग ६०० लोगों के रिसेप्सन का प्रबन्ध का जिम्मा यदि आप उठा लें तो हमारी बिटिया की शादी की रौनक दुगुनी हो जायेगी."

"अरे बड़े बाबू यह तो छोटी सी बात है. उसकी गृहस्थी बसाने की भी पूरी-पूरी जिम्मेदारी मेरी. पर शर्त यह है कि."

"शर्त?"

"हॉ शर्त."

"क्या सेठ जी?"

"कि आपका दफ्तर हमें प्रकाश ही प्रकाश देता रहे, अंधेरा कहीं भी, कभी न दिखाई पड़े."

"एवमस्तु" बड़े बाबू जी ने शिवजी की तरह सेठजी के सिर पर हाथ रख दिया. इससे क्या कि दोनों हम उम्र थे.

बड़े बाबू के बेटी की शादी की चर्चा शहर में बहुत दिनों तक होती रही. बड़े बाबू ने भी नौ हजार का लिफाफा शाखा प्रभारी को और पांच-पांच का लिफाफा अपने छः अधीनस्थों को तथा एक हजार का लिफाफा सुक्खीलाल को विदाई में दिया. सबने सुख और सम्पन्नता की दुआएं दी बड़े बाबू को.

बड़े बाबू खुश थे, बहुत खुश.

बड़े बाबू हम दो, हमारे दो में विश्वास

रखते थे. राष्ट्र भक्त थे. दफ्तर में तो वह जमाने के साथ चल रहे थे, परन्तु चाल-चलन, हाव-भाव, पसन्द-नापसन्द, आदत-व्यवहार से पूर्णतः भारतीय थे. राष्ट्र भक्ति भी करते, भगवत् भजन भी और धर्म-कर्म निर्वहन भी.

उस दिन रविवार था. सुबह-सुबह उनके शाखा प्रभारी का फोन आया, “बड़े बाबू बधाई. बहुत बधाई”

“किस बात की बधाई दे रहे हैं सर”

“अरे आपको कुछ पता नहीं क्या?”

“क्या सर?”

“अरे आपका बेटा सुशान्त दिल्ली सी.पी.एम.टी में तीसरे स्थान पर आया है और मेरी बिटिया भी उसी तीसरे स्थान पर. दोनों को एक ही बराबर नम्बर मिला है.”

“बड़े बाबू का दिल बल्लियों उछलने लगा. वह अपने प्रभारी को बधाई भी नहीं दे पाये. फोन कट गया. वह जल्दी-जल्दी तैयार हुए और अपने शाखा प्रभारी के घर की ओर बढ़ चले. रास्ते में बनवारी की बालूशाही लेना नहीं भूलें वह.”

उनके आंखो में खुशी के आंसू थे. उन्होंने लपक कर बालूशाही की डिब्बा उनके पैरों पर रखा दिया. साहब ने उन्हें गले से लगा लिया और बड़े प्यार और आदर से उनको अपने बगल में बैठाया. बड़े बाबू बड़े अदब से परन्तु सहमे-सहमें उनके बग़ल में बैठ गये. पहली बार उनके साथ चाय पिया. दबे-दबे तो रहे परन्तु खुश भी थे अन्दर से मन ही मन.

“सर”

“बड़े बाबू”

“जी सर”

“आपका रिटायरमेंण्ट तो अब छः महीने ही रह गये न.”

“जी.”

“अपने सभी काग़ज वगैरह तैयार कर लीजिये जिससे रिटायरमेंण्ट के दिन ही पेंशन पेपर्स, फण्ड, ग्रेचुयटी आदि आदि सब कुछ मिल जाय.”

“वह तो शुरु भी कर दिया है मैन सर.

“हॉ बड़े बाबू एक बात और कहना है. कह डालूं.”

“हुकुम कीजिये सर.”

“देखिये बुरा तो नहीं मानेगें आप.”

“अरे नहीं सर, आपकी बातों का बुरा कैसा और क्यों? आप तो मेरे भले के लिये ही कहेंगे और तो कुछ नहीं न?”

“अरे नहीं बड़े बाबू आप मुझे महिमा मण्डित कर रहे हैं.”

“नहीं सर, ऐसी कोई बात नहीं है सर.”

“बड़े बाबू”

“मैं चाह रहा हूँ कि आपके बेटे और अपनी बेटी की सात-आठ सालों की पढ़ाई का बोझ मैं उठाऊं. यह मेरा फर्ज भी है और आपकी छः माह के बाद रिटायरमेण्ट के बाद की आपकी आवश्यकता को भी महसूस कर रहा हूँ. आप अपनी पत्नी के साथ सुख से जीवन यापन करें और मैं अपना आज और कल का कर्म पालन करुं.”

“सर”

“हॉ यह भी चाहूंगा कि मैं कि मेडिकल की प्रथम परीक्षा के बाद इन दोनों का विवाह बन्धन में बांध दें.”

“सर”

“हॉ यह जरुर है कि आप ब्रहमण है और मैं एक शुद्र शेडयूल कास्ट और इसी कारण मैं आपका अफसर हूँ परन्तु बड़े बाबू मेरी एकलौती बेटी जनरल बच्चों में तीसरे स्थान पर आपके बेटे के साथ ब्रेकेटेड हैं. वह शेड्यूल कास्ट

क्या बताऊं बड़े बाबू अमावस्या की अंधेरी रात छटने को नहीं आ रही है”

“इस इक्कीसवीं सदी में अमावस्या की रात में अंधेरा कहां होता है सेठ जी.

सेठ जी बिटिया की शादी है. छः जनवरी को. आपे तो शहर के पुराने रईस और बड़े व्यावसायियों में से एक है. आपके सहारे ही बिटिया का विवाह निश्चित किया. लगभग 600 लोगों के रिसेप्सन का प्रबन्ध का जिम्मा यदि आप उठा लें तो हमारी बिटिया की शादी की रौनक दुगुनी हो जायेगी.”

“अरे बड़े बाबू यह तो छोटी सी बात है. उसकी गृहस्थी बसाने की भी पूरी–पूरी जिम्मेदारी मेरी. पर शर्त यह है कि आपका दफ्तर हमें प्रकाश ही प्रकाश देता रहे.”

ग़ज़ल

क्यूं ठहरा है आस लिये
त्याग के सुख संन्यास लिये
आशाओं के भॅवर में डूबा
भाव-चलित विन्यास लिये
अश्रु की धारा ऐसे निर्झर
ऋतु सावन मधूमास लिये
शीतल जल में डूबी काया
चॅचल मन में प्यास लिये
चन्दन वन में तपती ज्वाला
ठन्डक का विश्वास लिये
दर्द भी अपना कैसे सुनाऊँ
ओठों पर आभास लिये
मिटती खुशियॉ हर इक क्षण में
रुदन भरा एहसास लिये
बिछुड़ के अब हम भटक रहे है
ममता का आकाश लिये।

देवी चरन कश्यम, कानपुर, उप्र.

की बेटी जरुर है शुद्र नहीं."
"सर"
"हॉ वह खूबसूरत भी है बड़े बाबू. मेरी बीबी एक सुन्दर कायस्थ पी.सी. एस की सुन्दर बेटी है."
"सर"
"बड़े बाबू इनका एडमिशन होने दीजिये सोटा लीजिये. रिटायरमेंट के दिन बता दीजियेगा. हमें जल्दी नहीं हैं."
"अच्छा सर, चलते हैं. इजाजत दीजिये नमस्कार बड़े बाबू ने किया, सर ने जवाब दिया और बड़े बाबू बहुत ध ीरे-धीरे चलते हुये पैदल ही घर की ओर चल पड़े.
"कहॉ से आ रहे हो. बिना बताये कहॉ चले गये थे. अमित पास हो गया. डाक्टरी में नाम लिखा जाएगा. मेरा बेटा डॉक्टर बन जाएगा, डॉक्टर. बहू भी डॉक्टरनी लाएगा. अरे सुन रहे हो." पण्डिताइन बोले चली जा रही थी.
"हॉ. भाई किसी को मुकम्बल जहॉ मिला है क्या." बड़े बाबू थे यह.
"तुम क्या कह रहे हो. समझ में नहीं आ रहा है कुछ." पण्डिताइन बोली.
"समझ जाओगी छः महीने बाद. खाना लाओ भूख लगी है. अमित कहॉ है?"
"अपने दोस्तों के साथ."
"अच्छा खाना लाओं."
खाना खाकर बड़े बाबू बिस्तर पर लेट गया और छत में ही तारे गिनने की चेष्टा करते-करते उनकी आंख लग गई.
बड़े बाबू दफ्तर जाते. दफ्तर से लौट आते. खुश रहने की कोशिश करते. पर वह बात नही थी जो उनमें पहले थी. एक परिवर्तन जरुर आया उनमें. अन्धेरे को प्रकाश में बदलने की बात अब नहीं करते वह. आगे होने वाले बड़े बाबू को यह काम सौंप दिया था. उन्होंने अपना इस तरह का काम भी उन्होंने उन्हें ही दे दिया. अपने पास तो केवल वे काम रख रखा था जिनको जिन्दगी का पर्याय नहीं बनना था. वे अब केवल जिन्दगी में रस ढूढते थे, अंधेरा उन्हें दिखाई नहीं पड़ता था. प्रकाश से चौंध नहीं लगती थी उन्हें, जीवन के आनन्द की महिमा समझ में आ गई थी. सुख की नई परिभाषा ढूढ लिया था उन्होंने.
बड़े बाबू अपने बनाये दफ्तरी नियमों से बंधे अवश्य थे इसलिये होने वाले बड़े बाबू से वह केवल एक रुपये लेते थे अपने हिस्से में से. शेष हिस्सा अपने अधीनस्थो के बीच बंटवा देते थे.
इसे वह सुखमय परिवर्तन की संज्ञा देते थे. आखिर ३० नवम्बर आ ही गई. बड़े बाबू का फेयरवेल था. उनके रिटायरमेंण्ट सम्बंधी सभी कागज तैयार थे. हॉल में कार्यालय के सभी कर्मचारी थे. बड़े बाबू के शान में कसीदे कहे गये. कह कहे लगे. संगीत का दौर चला. बड़ा ही खुशनुमा माहौल था. बड़े बाबू से आर्शीवचन कहने का आग्रह किया गया. बोले बड़े बाबू.
"सुख के दिन सामने हैं. आपसे अलग होने का दुःख नहीं. अपनों से अलग नहीं हो सकता कोई. दूरी अवश्य बढ़ जायेगी आज शाम से, पर यह दूरी हम सबको और भी नजदीक लायेगी बहुत ही नजदीक. आप खुश रहे, आनन्दित रहें, सम्पन्न रहें औश्र रहे अपने काम में चुस्त और दुरुस्त." थोड़ा रुक कर एक गिलास का थोड़ा पानी सिप करके फिर बोले बड़े बाबू, "आपको अभी से एक दावत नाम देना है सबकों, पूरे दफ्तर को."
"बड़े बाबू, बीच में एक ऊंची आवाज आई."
"हॉ! हॉ बता रहा हूँ सेवानन्द, बता रहा हूँ." थोड़ा थूक निगल कर, "मेरे बेटे अमित का विवाह साहब की बेटी उत्तरा से अगले साल के ३० नवम्बर को होगी. आप सब-सब बाल बच्चों सहित आइएगा जरुर."
बड़े बैठ गये और गटागट रखे गिलास का पानी एक ही सांस में पी गये जैसे महीनों से प्यासे रहे हो वह.

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ३. पत्रिका के सदस्य पत्रव्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.४.हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएॅ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कविता तो अच्छी लगती ही होगी. आइए इस बार कोयल कविता पढ़े.
आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

उम्र की चिरैया

उम्र की चिरैया
बचपन में फुदकी
जवानी में सोई,
भटकी जब राह
थक हार रोई
जर्जर जब पंख हुये
एक नहीं दोई,
अंतिम उड़ान भर
गहन नींद सोई

ठाकुरदास कुल्हारा, जबलपुर, म.प्र.

कोयल

कोयल काली
कितनी भोली भाली
ग़ज़लो वाली
गीतों से गई
झुक मधुबन की
है डाली डाली।
कब से गाती
कबतक गाओगी
यो मतवाली?
लघु कंठ में
तुमने क्यों इतनी
मिसरी ढाली?
कैसे तुमने
इतनी कविताएं
प्रभु से पा ली?
छिपी कहां से
खोज न पाता तुम्हें
बाग का माली?
ब्याह आज है
बसंती का गाओ री
मंगल आली!

नलिनीकान्त, अंडाल, पं. बंगाल

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठको,
हमारा यह प्रयास हमेशा से रहा है कि आपको मनोरंजक के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक सामग्री भी दी जाए. आपकी पसंदीदा पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' ने आपके इस प्रयास में आपकी भरपूर मदद करने का फैसला लिया है. शीघ्र ही एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जिसमें जापानी भाषा के वर्णाक्षरों से लेकर बोलचाल तक की जानकारी समाहित होगी. इसे जापानी भाषा की कई पुस्तकों को हिंदी में अनुवाद कर चुकी सुप्रसिद्ध हिन्दी व जापानी लेखिका डॉ. श्रीमती राज बुद्धिराजा के द्वारा प्रदान किया जाएगा.

मूल्य वृद्धि सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों
इस वर्ष लगातार हो रही कागज मूल्य में वृद्धि को देखते हुए न चाहते हुए भी पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करने को मजबूर हो रहे हैं. आशा है आप सभी सुधी पाठकों का स्नेह हमेशा की तरह आगे भी मिलता रहेगा. एक प्रतिः ५/-रु० वार्षिकः ६०/-रु० द्विवार्षिकः१००/-रु० विशिष्ट सदस्यः१११/रु० आजीवनः११००/रु०

आवश्यकता है

हिन्दी मासिक **विश्व स्नेह समाज** हेतु भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे *संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट,विज्ञापन प्रतिनिधियों की.*
हिन्दी साप्ताहिक **द हंगामा इंडिया** हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों **संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधि** कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति जबाबी लिफाफे के साथ लिखें

स्नेह बाल प्रतियोगिता-०२

हम इस अंक से छोटे बच्चों के लिए एक बाल प्रतियोगिता प्रारम्भ कर रहे हैं. जिसमें प्रत्येक माह एक विषय दिया जाएगा जिस पर आपको एक चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम स्थान पाने वाले बाल चित्रकार के चित्र को प्रकाशित किया जाएगा तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले का नाम, पिता का नाम, कक्षा व पता छापा जाएगा साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा. यह प्रतियोगिता ५ वर्ष से १२ वर्ष तक के उम्र के बच्चों के लिए ही होगी. इसके लिए बच्चों को अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य से उम्र लिखवाकर हस्ताक्षर कराना होगा. अपने चित्र के साथ नीचे दिया गया कूपन लगाना न भूलें अन्यथा स्वीकार्य नही होगा.

विषयः झगड़ा मत करो

कूपन

संपादक, विश्व स्नेह समाज,
बाल चित्र प्रतियोगिता न०१, एल. आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
प्रतिभागी का नामः..................
पिता का नामः......................
कक्षाः......स्कूल का नामः...पताः...

श्री श्यामलाल उपाध्याय

३ मार्च १९३१ को औंदी, चिलकहर के बलिया जनपद, उत्तर प्रदेश में जन्में श्री श्यामलाल उपाध्याय के पिताश्री ज्योतिष के विद्वान स्व० पं. गंगाफल उपाध्याय एवं माताश्री स्व० जानकी देवी उपाध्याय थी. आपकी धर्मपत्नी स्व० गौतमी उपाध्याय थी. तीन सुशिक्षित पुत्र एवं दो पुत्रियों सहित आपका भरा पूरा परिवार हैं. आप साहित्य सेवा-साधना में निरत हैं.

आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी साहित्य में एम.ए. ,लोरेटो कॉलिज से टी.टी.सी और सेंट जेवियर्स, कोलकाता से बी.एड. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की.

सेवा साधनाः पूर्व प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सेंट जोसफ्स कॉलिज, कोलकाता, अंशकालिक प्रवक्ता, मौलाना आजाद कॉलिज, कोलकाता, मंत्री, आकूत साहित्यिक संस्था, कोलकाता, मंत्री, आकूत साहित्यिक पत्रिका, कोलकाता, संस्थापक एवं मंत्री, भारतीय वाङमय पीठ, कोलकाता, संस्थापक एवं मंत्री, कोलकाता ग्रामर स्कूल, कोलकाता, सदस्य, हिन्दी भाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण पूर्व रेलवे, वाल्टेयर, सदस्य-बोर्ड फॉर ऐंग्लो, इण्डियन एडयूकेशन, पश्चिम बंग.

साहित्य साधना- काव्य- नियति न्यास, मन्तव्य प्रकाशन, कोलकाता, नियति निक्षेप-भारतीय वाङमय पीठ, कोलकाता, संपादन- काव्य मंदाकिनी, २००४, २००५, भारतीय वाङमय पीठ, कोलकाता, यंत्रस्थ- आस्था के अंकुर, सौरभ के स्वर, बाल काव्यमय शब्दकोश, प्रकाश्य- काव्य, काव्यकथा, कथा, निबंध, समीक्षा, पत्र, परिचय, रपट, एवं बाल साहित्य.

विशेषः काव्य, काव्यकथा, कथा, निबंध, समीक्षा, परिचयात्मक आलेख, रपटें देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित,

सम्मानः अनेक सम्मान, सम्मानोपाधियों से अलंकृत, विभूषित

अभिमत एवं मन्तव्यः श्री श्यामलाल उपाध्याय एक लोकप्रिय शिक्षक रहे हैं और साहित्य के मान्य आचार्य. इन्होंने इसी परिदृश्य में अपना कविकर्म सार्थक किया हैं. नियति न्यास, नियति निक्षेप, काव्य ग्रंथ इसके प्रमाण हैं. मेरा विश्वास है कि भविष्य में ये इसी तरह अपनी रचना धर्मिता का उत्कर्ष करते रहेगें. **कल्याणमल लोढ़ा,** पूर्व कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान

श्री उपाध्याय में सभी कवि सुलभ गुण हैं. इनकी रचना, चिन्तन का एक सबल परिपुष्ट साधन हैं. इनमें एक प्रकार की दार्शनिक दृष्टि हैं. जिसके संस्पर्श से काव्य में भाव और विचार स्फूर्त हैं. **मुनीश्वर झा,** डीलीट, पूर्व कुलपति, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

जिस कवि के भीतर सहृदयता एवं कल्याण की भावना है, गहरी आस्था और भविष्य के स्वप्न है, जिसकी कविता मनुष्यता के कल्याण के लिए अर्पित है, उसके लिए शुभकामनाएँ हैं. श्री उपाध्याय के स्वप्न सच हो, यही कामना हैं. **प्रभाकर श्रोत्रिय,** निदेशक, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता

आज यहाँ आतंक

डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल', चम्पावत

सजा हुआ हर ओर है, दोषों का बाजार।
मात्र उन्हीं का हो रहा, आये दिन विस्तार।।
नहीं गुणों की दिख रही, किसी व्यक्ति में चाह।
अतः बढ़ा हर ओर है, धरती पर दुख–दाह।।
होता है गुणहीन का, आये दिन सम्मान।
कैसे होगी राह तब, जीवन की आसान।।
फैला चारों ओर हैं, आज यहाँ आतंक।
हुए सभी भयभीत हैं, राजा हो या रंक।।
मिटते हैं इस देश में, कितने ही निर्दोष।
किन्तु उठाया जा रहा, कोई कदम न ठोस।।
असर दिखाने लगा गया, अन्धकार हर ओर।
नहीं कहीं से झाँकती, सुखद सुहानी भोर।।
आज न मिलती है कहीं गुणी जनों की राह।
कोई बढ़ा न पा रहा है उनका उत्साह।।
लोग दोष को कर रहे हैं, अपना गुण सिद्ध।
रहा न मानव के लिए, कोई कर्म निषिद्ध।।
कदाचार का देश में, फूल रहा व्यापार।
नहीं मानना चाहता, कोई अपनी हार।।
भूमण्डल में चल रही, हवा नहीं अनुकूल।
धरती में खिल पा रहे, नहीं कहीं भी फूल।।
ऐसे होगा देश का लगता नहीं विकास।
यदि संस्कृति का क्षीण ही, होता रहा प्रकाश।।

युद्ध

✍जीवितराम सेतपाल

दोनों शोध-छात्र पंजाब एवं उत्तर का प्रतिनिधित्व करने वाले-एक सुरिन्दर दूसरा राम प्रसाद. विशेष पाठ्यक्रम हेतु एक विश्व विद्यालय में मिले. एक ही कमरे में ठहराये गये. दूध और पानी की भॉति घुल-मिल गये दोनों. तीन सप्ताह तक का साथ अभी तो तीन दिन ही बीते थे. उनका यह तीन दिनों का सफर मानो तीन घण्टों में बीत गया. साथ-साथ चाय-नाश्ता करने जाना, साथ-साथ भोजन करना, सोने के पहले खूब घुल मिलकर बातें करना, परस्पर रचनाओं का श्रवण पान करना दोनों को अच्छा लगता. अपने इन तीन दिनों के सहवास में न जाने कितनी बार पिछले जन्म के सम्बन्धों की दुहाई दे चुके थे दोनों. यदि कोई एक आलस्यवश किसी सत्र में अनुपस्थित रहने का मूड बना लेता तो दूसरा उसकी उपस्थिति दर्ज कर देता था जैसे कॉलेज में छात्र करते हैं.

आज सुरिन्दर ने चद्दर साथ-साथ नहीं तानी, उसे कुछ लिखना था. राम प्रसाद ने बत्ती बुझाने का इशारा किया. सुरिन्दर ने इनकार करते हुए कहा-नहीं बन्धु, मैं एक आर्टिकल लिखकर बुझा दूँगा.

'लेकिन रोशनी में मुझे नींद नहीं आती और नींद पूरी न मिलने पर अगला दिन खराब हो जाता है. मुझे रोशनी में सोने की आदत नहीं.

'मुझे यह आर्टिकल हर हालत में कल पोस्ट करना है, नहीं तो बड़ी गड़बड़ हो जायेगी, तीन दिनों से कुछ नहीं लिखा.

'दिन में लिख लेना, सत्र में मैं आपकी हाज़िरी लगवा दूँगा.

'फिर भी लेख पूरा नहीं होगा, मुझे हर हालत में लिखना ही होगा.

रामप्रसाद चट से उठता है और स्विच ऑफ कर देता है, पट से सुरिन्दर उठता है और स्विच ऑन कर देता है.

'यह क्या बदत्तमीजी है, मेरी तन्दुरुस्ती का तो ख्याल करो!'

'बदत्तमीजीं आपने की, मेरी रोज़ी -रोटी का सवाल हैं.'

'तुम्हारी रोज़ी-रोटी से मेरी हेल्थ ज्यादा इम्पार्टेंट हैं.'

'तुम्हारी हेल्थ से मेरी रोज़ी रोअी का महत्व अधिक हैं'

'देखो मैं फिर से बत्ती बुझा दूंगा!'

'मैं फिर से जला लूँगा!'

'गंगा किनारे वाला हूँ, झापड़ रसीद कर दूँगा, समझे! लिहाज नहीं करुँगा!'

'घूसों की बरसात कर दूँगा, पंजाब का जाट हूँ याद रहे! जैसे ही रामप्रसाद बत्ती बुझाने के लिए आगे बढ़ता है, चुस्ती से सुरिन्दर उसे घसीट कर बिस्तर पर पटकदेता है और मुँह तक चद्दर उठाकर कहता है-'लो, अब ऑख बन्द करके सो जाओ!'

'यह तुमने अच्छा नहीं किया! कल जो तुमको काव्य संग्रह भेंट किया था, वापस कर दो! मैंने एक घटिया आदमी को उपहार दिया था.'

'तुम मेरा कथासंग्रह लौटा दो. काश मैंने मूर्ख को उपकृत न किया होता!'

'मै मूर्ख हूँ?'

'मुझे घटिया क्यों कहा?'

'मुझे आपकी पत्रिका का सदस्य नहीं बनना, पैसा लौटा दो!'

'मैंने जो रसीद तुम्हें दी थी, वापस कर दो!'

'मैंने जो कवितायें सुनायी थीं, वापस कर दो!'

'वे तो मैंने कचरे की टोकरी में डाल दीं है, जाकर उठा लो!'

'वही तो तुम्हारा जन्म स्थान है!'

'देखो, तुम हद से आगे बढ़ रहे हो!'

'अब बकवास बन्द करो, मेरे लिखने का मूड खराब मत करो!'

'उसी गटर में गया तू और तेरा मूड!'

सुरिन्दर को गुस्सा आ जाता है और रामप्रसाद को झापड़ रसीद कर देता है और कहता है..चुप चाप जाकर सो जाओ वर्ना हड्डी-पसली एक कर दूँगा! पंजाब के आगे गंगा की भुर भुरी मिट्टी क्या दम लेगी?

सुरिन्दर के एक ही झापड़ ने राम प्रसाद को गंगा में गोते लगवा दिये थे. वह मन ही मन उसे गालियॉ देता सिर्फ इतना ही उससे बोला-जाओ तुम्हारे साथ नहीं रहेगे हम, कल ही अपना रुम बदलवा लेगें.

कल ही क्यों? अभी इसी वक्त बदल लो! इतना कहते हुए सुरिन्दर ने रामप्रसाद का बैग उठाकर दरवाजें के बाहर रख दिया.

प्रधान सम्पादक, प्रोत्साहन

स्नेह प्यार से

स्नेह-प्यार से रहं यहॉ सब
गॉव बनें सब कुन्दन कुन्दन
मुस्काता हो दर्पन दर्पन
स्नेह-प्यार अति आवश्यक है
जाग्रत करिये यौवन यौवन
पर्यावरण लक्ष हो सबका
वृक्ष लगाऐं ऑगन ऑगन
भारता प्यारा देश हमारा
उन्नत करिये जीवन जीवन
राजघाट भी हरिद्वार भी
तीरथ समझो पावन पावन
स्नेह-प्यार से रहे यहॉ सब
मानवता का गाऐं गायन।

श्याम भँवर 'श्यामें', नीमच, म.प्र.

मानव मन

कैलाश त्रिपाठी, औरैया, उ.प्र.

शास्त्रों ने मानव शरीर को स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन रुपों में परिभाषित करते हुए स्थूल शरीर के करणों को बाह्यकरण तथा सूक्ष्म शरीर के कारणों को अन्तःकरण कहा हैं. पंचभूतात्मक इस स्थूल शरीर में वाक्, हस्त, पाद्, उपस्थ और गुदा पॉच कर्मेन्द्रिया एवं त्वचा, नेत्र, रसना, श्रोत्र, और घ्राण पांच ज्ञानेन्द्रिया ही बाह्यकरण तथा सूक्ष्म शरीर के चार करण मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अन्तःकरण कहे गये हैं. अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश इन पंच कोशों में मन मध्यस्थ हैं. ये पॉचों कोश क्रमशः इन्द्रिय, शरीर, मन, बुद्धि एवं जीवात्म के द्योतक हैं. आत्मा स्वयं में अविकारी और आनन्दमय हैं. मन विषयों या विकारों में लीन होकर विकारी और मलिन हो जाता हैं. बाह्य करणों का नियंत्रण अन्तःकरणों से होता हैं. इन्द्रियों सहित शरीर का नियामक मन हैं. मन पर नियत्रण के अभाव में इन्द्रिय निग्रह संभव नहीं हैं. मन करण भी है और कारण भी. मन का शक्तिशाली साम्राज्य व्यापक है. महाभारत में यक्ष के प्रश्न करने पर युधिष्ठिर ने मन को वायु से भी अधिक गतिवान बताया है. इसका वेग अत्यन्त प्रबल हैं. गीता के छठवें अध्याय में भगवान ने जब अर्जुन से समत्वयोग के अन्तर्गत एकीभाव से सम्पूर्ण भूतों में परमात्मतत्व को व्याप्त देखने तथा सम्पूर्ण भूतों की उसी मुझ वासुदेव में देखने का उपदेश दिया तब अर्जुन ने मन को बड़ा ही चंचल, प्रमथन स्वभाव वाला, दृढ़ और बलवान मानते हुए इसका निग्रह वायु की भांति अत्यन्त दुष्कर बताया है.

चचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।
गीता ६/२४

सुख-दुख, प्रवृत्ति-निवृत्ति आदि मनोगत है. ऑख से देखे हुये, कान से सुने हुये विषयों से मन में जल-तरंगवत निरन्तर असंख्य वृत्तियां उत्पन्न होती रहती है. इन मनोवृत्तियों में कुछ, बुद्धि, चित्त और अहंकार के संयोग से प्रबल होकर मनुष्य को तद्नुसार कर्म करने को विवश करती है. कर्म के अनुसार वृत्तियां और वृत्तियों के अनुसार कर्म अर्थात् कर्म और वृत्तियां दोनों एक दूसरे के पूरक हैं. इन वृत्तियों में सत्-रज-तम प्राकृतिक गुणों की अहम् भूमिका होती है. सत् की अधिकता से वृत्तियां सात्विक, रज की प्रबलता से राजसिक और तम की बाहुल्यता से वृत्तियां तामसिक बनती है. मन अपने अनुसार इन्द्रियों से कार्य करता है तथा इन्द्रियगत विषयों की मृदु और तिक्त अनुभूतियां भी मन ही करता है. मन के अनुसार ही इन्द्रियों का अपने विषयों में रत होना ही प्रवृत्ति तथा मन से वृतियों का निर्मूलन या निग्रह ही निवृत्ति हैं. बाह्य कर्म सन्यास के रुप में गृह त्याग, वस्त्र त्याग या उनका रंग परिवर्तन वास्तविक निवृत्ति नहीं है. क्योंकि भौतिक बाह्य कर्म त्याग के अनन्तर ही मन विषयों में रमण करता रहता हैं. यह जाग्रतावस्था से हीं नहीं स्वप्नावस्था में भी अपना प्रभाव दिखाता हैं. यह अपने अन्दर सूक्ष्मरुप में समाविष्ट पूर्व भोगों के संचित संस्कारों को लेकर मनोमय सृष्टि करके उसी में स्वप्नावस्था में रमण करने लगता हैं. इन्द्रियों के माध्यम से शरीर द्वारा भोगे गये भोगों या कर्मो के संस्कारा या अनुभूतियां मन में बहुत गहरे समाहित होती रहती है. इस प्रकार जीवन में भोगे गये भोगों, विभिन्न कर्मो और वृत्तियों के अनुरुप ही अगले स्थूल शरीर का निर्माण होता है. अन्तकरण को ही प्रकारान्तर से सूक्ष्म शरीर कहते हैं तथा मनोवृत्तियों, इन्द्रियों द्वारा भोगे गये भोगों की अनुभूतियां और संस्कारों के साथ अद्यतन उनसे अतृप्ति, विभिन्न कर्मो के अवशेष कर्मफल एवं अन्य अनभोगों को भोगने की शेष इच्छाओं आदि का समुच्चय ही कारण शरीर है. जीवात्मा स्थूल शरीर छोड़ते समय सूक्ष्म शरीर

श्याम सुंदर नंदलाल

श्याम सुंदर, नंदलाल अब दरश दिखाइए।
तरस रहे प्राण इन्हें और न तरसाइए...।।
त्याग गोकुल और मथुरा जाके द्वारका बसे।
सुध बिसारी काहे हमरी, ऊधो जी बताइए...
ज्ञान, ध्यान हम न जाने, नेह के नाते को माने।
गोपियां सारी दुखारी, बंसरी बजाइए....
टेरती जमुना की लहरें, फूले ना कदम्ब टेरे।
खो गए गोपाल कहाँ, दधि-मखन चुराइए।
ऊधो जाओ! कृष्ण जी को हाल सब बताइए।
शांति है अशांत दरश दे सुखी बनाइए...
चरणों में भक्ति रहे, मन उन्हीं का गान करें
दूर भी रहें तो प्रभु नंदलाल न बिसराइए....

श्रीमती शांति देवी वर्मा, सुभद्रा चौहान वार्ड, जबलपुर

के साथ बीज रुप में संस्कार, कामनायें एवं अवशेष कर्मफल लेकर गमन करता है तथा तदनुरुप स्थूल शरीर धारण कर पुनर्जन्म को प्राप्त होता है. इसीलिये मन को बन्धन और मोक्ष का कारण माना गया है. 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः' इसी के सापेक्ष भानुदत्त त्रिपाठी लिखते है कि-

मन के बनकर दास मनुज तुम
व्यर्थ करो मत इस जीवन को,
मन को करके आत्म नियंत्रित
सुफल करो इस मानव तन को।
शक्ति असीमित भरी हुई है वानर
सम इस चंचल मन में
मन ही बन्धन और मोक्ष का
कारण है इस भव कानन मे।।
मन की धुरी पर घूम रहा है

मानव जीवन. किसी भी कार्य की सफलता मन की एकाग्रता एवं स्थिरता पर निर्भर है. मन की अस्थिरता के परिणाम स्वरुप व्यक्ति अपनी इच्छाओं को कार्य रुप में परणित नहीं कर पाता. मन के निग्रह बिना जीवन में शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती. मन का निग्रह या निवृत्ति मोक्ष कारक हैं. सभी साधनाओं में मन की स्थिरता और निग्रह अनिवार्य हैं. ऋगवेद में आया है 'भद्रं नो अविवातय मनः' अर्थात् हे अग्निदेव मेरे मन को शुभ अर्थात अपने अनुकूल करो. पतंजलि योग दर्शन में चित्तवृत्तियों के निरोध ा को ही योग बताया गया है-'योग चित्तवृत्ति निरोधः'. अब प्रश्न यह है कि मन का निग्रह कैसे हो? शास्त्रों में मन के निग्रह के विभिन्न उपाय बताये गये हैं. कतिपय मनीषियों के अनुसार मन की गति मन से ही नियंत्रित होती हैं. अर्जुन द्वारा मन का निग्रह दुष्कर बताये जाने पर भगवान ने इसे सहज स्वकीरते हुए अभ्यास और वैराग्य से इसका वश में होना बताया हैं.

असंशयं महाबाहों मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहयते।। गीता ६/३५

मन की स्थिति को कठोपनिषद में रथ का एक सुन्दर रुपक देकर समझाया गया हैं. जिसमें शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि, इन्द्रियों को घोड़े तथा मन को लगाम माना हैं. अर्थात इन्द्रियों पर नियंत्रण मन के माध्यम से बुद्धि द्वारा होगा.

शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि, इन्द्रियों को घोड़े तथा मन को लगाम माना हैं. अर्थात इन्द्रियों पर नियंत्रण मन के माध्यम से बुद्धि द्वारा होगा.
गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में काम, क्रोध, लोभ, मोह, विषय मनोरथ, हर्ष-विषाद, ममता, कुटिलता, ईर्ष्या, दंभ, कपट, मद, मान, अहंकार, तृष्ना एवं अविवेक आदि को मनोविकार अर्थात मन के रोग माना है

आत्मानं रथिनं बिद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विबयांस्तेबु गोचरान्।
प्रथम अध्याय-तृतीय वल्ली

यहां संकेत यह है कि मन पर नियंत्रण विवेक द्वारा होगा. विषया सक्ति के कारण मनुष्य जीवन के उद्देश्य को भूलकर मन के वशीभूत पतनोन्मुख होकर चौरासी लक्ष योनियों में चक्कर काटता रहता हैं. मन को अभ्यास वैराग्य और विवेक से संसार और इन्द्रिय भोगों से हटाकर परमाप्मा से सम्बद्ध कर देने पर उसे आकर्षक वस्तुयें भी आकृष्ट नहीं कर पाती. मन के परमात्मरति में लीन होने पर लौकिक रति रसहीन हो जाती हैं. ब्रहमयुक्त योगी का मन इतना दृढ़ होता है कि वह ब्रहमानंद के अतिरिक्त कहीं जाता हीं नहीं.

गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के उत्तराखण्ड में काम, क्रोध, लोभ, मोह, विषय मनोरथ, हर्ष-विषाद, ममता, कुटिलता, ईर्ष्या, दंभ, कपट, मद, मान, अहंकार, तृष्ना एवं अविवेक आदि को मनोविकार अर्थात मन के रोग माना है तथा इसके मुक्ति का उपाय इस प्रकार बताया हैं.

सद्गुरु वैद बचन विस्वासा।
संजय यह न विषय कै आसा।।
रघुपति भगति सजीवन मूरी।
अनूपान श्रद्धा मति पूरी।।

अर्थात सद्गुरु में विश्वास, विषयों की आशा का संयम तथा श्रद्धा के साथ भगवान की भक्ति से ही इन मनोविकारों से मुक्ति संभव हैं. गोस्वामी जी कहते है कि मन की गति माया तक ही है. गो गोचर जहँ लगि मन जाई. तहँ लगि माया समझहु भाई। हमें मन से ऊपर उठकर विज्ञानमय कोश के माध्यम से आनंदमय कोश में पहुंचाना होगा. विकारों से रहित निर्मल मन होने पर परमात्वतत्व की प्राप्ति होती है.

निर्मल मन जन सो मोहि पावा. मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

इस रहस्यमय मन में गुण और दोष दोनों हैं. मन की विषमता से ही लोक में छल-कपट के साथ विवादों का जन्म होता हैं. मन से ही दुख-सुख, हर्ष-विषाद, क्लेश, क्षोभ, चिंता आदि का अस्तित्व प्रतीत होता हैं. मनुष्य को मन का सेवक नहीं स्वामी बनकर इस पर नियंत्रण करना है. मन की अधीनता बन्धन का कारण है तथा मन को अपने अधीन करना मुक्ति का.

हर जगह जरुरी है अनुशासन

✍वाल्टर वियेरा,

नवंबर २००१ में हमारे रक्षा मंत्री ने अपनी राय दी थी कि देश में सोलह से बाइस वर्ष के युवाओं को कम से कम दो महीने के लिए सेना की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए. उनकी राय में युवाओं के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए. उन्होंने अपने इस विचार को साफ तौर पर बताते हुए कहा था कि यह व्यवस्था देश में सेना की शक्ति में बढ़ोत्तरी के लिए नहीं हैं. यह हमारे देश के युवाओं को और अधिक अनुशासित बनाने के लिए जरुरी हैं. वह मानते है कि यदि यह किया गया तो न सिर्फ इससे हमारे देश के युवाओं का बहुत भला होगा बल्कि सभी भारतीय फायदे में रहेगें.

दरअसल दो महीने ट्रेनिंग के लिए बहुत कम है. अगर एक साल की ट्रेनिंग बहुत ज्यादा लगती है तो कम से कम इसे छह महीने तो किया ही जा सकता है. सिंगापुर में तो दो साल की सेना की ट्रेनिंग हर नागरिक के लिए अनिवार्य है. लेकिन शायद अपनी सरकार इसकी जिम्मेदारी उठा न पाए क्योंकि इस नियम के लागू होने पर पंद्रह से बीस करोड़ युवाओं को‌ ट्रेनिंग देने की व्यवस्था करनी पड़ेगी.

पिछले हफ्ते मैं पुणें से मुंबई अपनी कार से जा रहा था. जिस रास्तें पर मैं चल रहा था, वो भारत के कुछ एक सबसे अच्छे राजमार्गो में से हैं. मैं उस राजमार्ग की सफाई, चिकनी सड़क और चौड़ाई देख कर मन ही मन उसकी तारीफ कर रहा था. सिर्फ राजमार्ग ने हीं नहीं, उस सड़क के दोनों तरफ और बीच में बड़े करीने से लगाए पेड़ों ने भी मेरा मन जीत लिया था. असलियत ये है कि इस प्रकार के सुंदर और व्यवस्थित राजमार्ग भारत में आम बात नहीं हैं. हालांकि यूरोप या यूएई में आपको ऐसे बहुत बहुत से राजमार्ग मिल जाएंगे. इतनी व्यवस्था के बाद भी मुझे आखिरकार लोनावला के पास अधूरी बनी सड़क मिल ही गई. जिसके कारण सभी वाहनों को घूम कर जाना पड़ रहा था या दो या तीन घंटे के लिए जाम लग जाता था.

मैं भी ऐसे ही एक जाम में फंस गया. इस लंबे ट्रैफिक जाम का फायदा मिलता है वहीं आस-पास रहने वाले लोगों को. वे जाम में फंसे लोगों को लोनावला की चिक्की, मूंगफली या पानी जैसी ही अन्य बहुत सी चींजें बेचते है. घंटो तक लगे ट्रैफिक जाम में इन लोगों का छोटा सा व्यापार हो जाता है. मौके का फायदा उठाने वाले इन लोगों को मैं प्रतिभाशाली पर बेहद छोटे स्तर का उद्योगपति मानता हूँ.

थोड़ी देर में ट्रैफिक चलने लगा. हमारे वाहन तेजी से आगे बढ़े. लेकिन अपने वाहनों के साथ मैंने कुछ और चीजें भी हवा में चलती देखी. हमारे वाहनों की हवा से कागज, पालीथिन और कई तरह के लिफाफें साथ में उड़ रहे थे. ये लिफाफें उन्हीं खाने-पीने की चीजों के थे, जो ट्रैफिक खुलने का इंतजार कर रहे वाहन मालिकों को बेची गई थी. अपने अपने वाहनों में बैठे समाज में सम्मानित और प्रतिष्ठित पद प्राप्त लोगों ने कूड़ें को सड़क पर फेंक दिया था.

इसी यात्रा में आगे जाकर जैसे-जैसे हम मुंबई के करीब आते गए, यातायात भारी होता गया. सड़क पर कई जगह हमें रुकना पड़ा. हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं थी. इसकी आशा हमें थी. इस उदाहरण में लापरवाही की भावना दिखती हैं. पैकेट फेंकने वाले न केवल प्रौढ़, शिक्षित लोग थे, बल्कि कार जैसी मंहगी चीजों के मालिक थे और भारत के शहरी इलाकों में रहने वाले सम्मानित समाज से थे. इतना सब उनके पास होते हुए भी, उनमें सामाजिक चेतना और पर्यावरण की सुरक्षा की भावना नहीं थी. दरअसल, उनमें अनुशासन नहीं था.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी राष्ट्रीय महासचिव मनोनित

इलाहाबाद। राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को गत दिनों भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ का राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में राष्ट्रीय महासचिव, मनोनित किया गया. श्री द्विवेदी अब तक महासंघ में संगठन मंत्री, उत्तर प्रदेश–पूर्वांचल प्रभारी के पद पर थे। उनकी संगठन के प्रति उत्कृष्ट सेवा को देखते हुए कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से उन्हें यह पद सौपा हैं. उनके राष्ट्रीय महासचिव चयनित होने पर भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के श्री रामबाबू चौबे, अद्वैत दशरथ तिवारी, डॉ0 कुसुमलता मिश्रा, पवनेश पवन, सौरव कुमार तिवारी, सरदार दिलावर सिंह, पुष्पांजली दुबे, संजय गुप्ता सहित रजनीश तिवारी, राकेश जौहरी, अर्चना श्रीवास्तव, आदि ने बधाई दी.

महिलाओं में स्तर कैंसर का प्रकोप

महिलाओं में होने वाला एक प्रमुख रोग है स्तर कैंसर. महिलाओं में गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के बाद यहीं कैंसर ज्यादातर पाया जाता है. आमतौर पर स्तर कैंसर ३०-६० वर्ष की आयु में आक्रमण करता हैं. शहरीकरण तथा बदलती जीवनशैली ने कैंसर की संभावनाओं को बहुत बढ़ा दिया है.

स्तन में कैसर की संभावना उन महिलाओं में ज्यादा होती है जिन्हें मासिक धर्म १२ वर्ष की आयु से पहले ही शुरु हो गया हो और देर से अर्थात ५० वर्ष की आयु के बाद बंद हुआ हो. निसंतान महिलाएं ३५ वर्ष की आयु के बाद गर्भधारण करने वाली महिलाएं तथा बच्चों को स्तनपान न कराने वाली महिलाएं तथा बच्चों को स्तनपान न कराने वाली महिलाओं में भी स्तन कैंसर की संभावनाएं बढ़ जाती है. स्तर कैंसर वंशानुगत भी हो सकता है अर्थात सगे रिश्तेदार जैस मां, बहन या मौसी को स्तर कैंसर हो तो इसकी संभावनाएं और बढ़ जाती है. अत्यधिक मोटापा तथा शरीरिक श्रम का अभाव भी स्तन कैंसर के खतरे को बढ़ा देता है. हार्मोन रिप्लेसमेंट थैरेपी जिसे महिलाओं का यौवन लंबे समय तक बरकरार रखने का कारगर उपाया माना जाता है का लंबे समय प्रयोग करते रहने से भी स्तन कैंसर हो सकता है. प्रायः प्रारम्भिक अवस्था में इसके लक्षण स्पष्ट नहीं होते इसलिए महिलाओं को पहले पता नहीं चल पाता. ज्यादातर महिलाओं की अचानक ही स्तन की गांठ का पता चल पाता है. प्रारंभ में इन गांठों में दर्द नहीं होता. इस स्थिति में कभी-कभी स्तन के निपल से खून आ सकता है. उपचार न होने पर ये गांठे बढ़ती जाती है जिससे स्तन का आकार बदलने लगता है. निपल अंदर की ओर खिंच सकता और स्तन में सूजन भी आ जाती है. साथ ही बगल में गांठे बढ़ने लगती है जिससे कंधे तथा हाथ में दर्द होने लगता है. स्तन में हुई गांठ साधारण है या कैंसर की यह पता लगाने के लिए सबसे आसान तरीका है सुई परीक्षण. इसमें सुई द्वारा गाठ की कुछ कोशिकाएं निकाल कर उनका परीक्षण किया जाता है. मेमोग्राफी एक अन्य तकनीक है इसमें एक विशेष तकनीक से स्तन का एक्स रे लिया जाता है, जिसमें बहुत ही छोटी (५ मिलीमीटर) गांठ का भी पता चल जाता है. वे महिलाएं जिन्हें स्तन कैंसर होने की संभावना ज्यादा है उनके लिए अक्सर मेमोग्राफी द्वारा ही परीक्षण किया जाता है. इस तकनीक द्वारा प्रारम्भ में ही लक्षण दिखाई देने से कैंसर पता लगाया जा सकता है. स्तन कैंसर को शुरुआत में ही पकड़ने के लिए महिलाओं की जागरुकता बहुत जरुरी है. महिलाओं को स्वयं प्रत्येक मासिक धर्म के बाद अपने हाथों से अपने स्तनों को देखना चाहिए कि कोई गांठ या स्तन के आकार में किसी प्रकार का परिवर्तन तो नहीं आया हैं.

एक बार कैंसर की पुष्टि हो जाने पर डॉक्टर यह पता लगाने की कोशिश करते है कि कैसर कौन सी अवस्था में है क्योंकि इसी पर यह निर्भर करता है कि रोगी को किस प्रकार का इलाज दिया जाए. कैसर की अवस्था के निर्धारण के लिए कुछ परीक्षण करवाने पड़ते है जिसमें रक्त परीक्षण, छाती का एक्स रे तथा पेट का अल्ट्रासाउंड आदि प्रमुख है. स्तन कैंसर की पहली और दूसरी अवस्था में गांठ का आकार महत्वपूर्ण होता है. इन अवस्थाओं में शल्य चिकित्सा की आवश्यकता होती है. यदि स्तन की गांठ बहुत बड़ी है तो पूरा स्तन निकाल दिया जाता है. दूसरी ओर यदि गांठ छोटी है तो केवल गांठ के बगल की गिल्टियां निकाल ली जाती है और स्तन बच जाता है. इसके बाद ज्यादातर मरीजों को ४-५ सप्ताह के लिए रेडियोथैरेपी दी जाती है तथा ४-६ कोर्स कीमोथैरेपी के लिए दिए जाते हैं.

तीसरी अवस्था में कैसर बहुत बढ़ जाता है इसलिए २ से ८ कोर्स कीमोथैरेपी दी जाती है जिससे गांठ छोटी होकर ऑपरेशन लायक हो जाए.

नववर्ष २००७ की हार्दिक शुभकॉमनाए

दिवाने है हम, तुझे भी बना देगें। दिल में तेरे प्यार की, शमॉ जला देगें,
रहो चाहें जितने पत्थर दिल बन आप। पर यादों से अपनी, तुमकों भी रुला देगें।
इंतजार रहता है हर शाम आपका, रातें कटती है ले ले कर नाम आपका,
मुद्दत से बैठे है इसी आस पर, कि आज आयेगा कोई पैगाम आपका..।

सौरव कुमार तिवारी, पत्रकार,
मॉस्टर कॉलोनी, बरहज, देवरिया
मो०: 9305103903

Advt.02/07S

मीडिया एवं एड्स जागृति यात्रा

३ अक्टूबर से ८ अक्टूबर २००६ तक मीडिया एवं एड्स जागृति यात्रा इण्डियन मीडिया सेन्टर फॉर जर्नालिस्ट्स, इण्डियन मीडिया फोरम फॉर जर्नालिस्ट्स और यू.पी. समाचार डॉट कॉम-लखनऊ के सौजन्य से निकाली गयी. यह यात्रा सोनभद्र से चलकर, मिर्जापुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली, लखनऊ, कानपुर, उन्नाव, फतेहपुर और कौशाम्बी होकर वापस ८ को सोनभद्र पहुंची. यात्रा दल में डॉ.भगवान प्रसाद उपाध्याय, श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, श्री लक्ष्मी शंकर 'मधुप', यतेन्द्र कुमार त्रिपाठी, जय सिंह, भरदुल विश्वकर्मा 'सारथी' थें. इस यात्रा में बताया गया कि एच. आई.वी. का खतरा इस पर निर्भर करता है कि आपका व्यवहार कैसा हैं. अन्तरंग सेक्स, सूई, ब्लेड या ऐसे किसी उपकरण का इस्तेमाल और रक्त स्वीकार करने वाले हर व्यक्ति पर एच.आई.वी. का जोखिम हैं. एच. आई.वी. के केवल १५ प्रतिशत मामले सुई, ब्लेड या ऐसे किसी उपकरण के इस्तेमाल और रक्त संचरण के कारण होता हैं. एच.आई.वी. का खतरा कम करने के लिए- केवल एक सेक्स साथी, हमेंशा कंडोम का इस्तेमाल, यदि सेक्स साथी को सेक्स संचरित बीमारी है, तो सेक्स संबंध से पहले इसका उपचार, अनावश्यक सुई, ब्लेड, शल्यचिकित्सा या ऑपरेशन से परहेज बताया गया. यात्रा के दौरान इस तरह के अनेक एच.आई.वी. से जुड़ी समस्याओं का समाधान बताया गया.

श्री डी.पी.उपाध्याय 'मगन' मनीजी

विशिस्ट सदस्य 105

1 जनवरी 1961 को ग्राम बुबआपुर, पो0 सोनवानी, जिला–बलिया, उ.प्र. में श्री बद्री नारायण उपाध्याय के पितृत्व तथा श्रीमती पार्वती देवी की कोख से जन्में श्री दुर्गा प्रसाद उपाधय 'मगन' मनीजी 1984 में स्नातक अभियंन्त्रिकी (इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग) में करने के बाद भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण में नौकरी करने लगें. वर्तमान में आप नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, इलाहाबाद में प्रबन्धक (तकनीकी) के पद पर कार्यरत हैं.

आपने लेखन कार्य विद्यार्थी जीवन से प्रारम्भ किया. लेकिन बीच में लगभग 20 वर्षो तक लेखन कार्य अन्य उत्तर दायित्वों के कारण बाधित रहा. लेखन कार्य पुनः 2002 में प्रारम्भ किया. आप कवितायें, कहॉनी, व्यंग्य इत्यादि लिखते हैं. साथी ही आपकी रचनांए महान लेखक मुंशी प्रेमचन्द्र जी की तरह ही आम आदमी से जुड़ी हुई व उनकी समस्याओं पर केन्द्रित होती है. रचनाओं की भाषा वही है जो आम आदमी बोलचाल में प्रयोग करता है. रचनाएं पढ़कर ऐसा लगता है मानों आदमी स्वयं से जुड़ा हुआ पाता है.

श्रीमती तारा सिंह को विद्या वाचस्पति

विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ एवं अखिल भारतीय भाषा साहित्य साहित्य सम्मेलन बिहार के संयुक्त तत्वावधान में अररिया, बिहार में आयोजित १२ वें अधिवेशन में कवयित्रि श्रीमती तारा सिंह को उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा एवं सारस्वत साधना के लिए 'विद्या वाचस्पति' मानदोपाधि से अलंकृत किया गया. समारोह की अध्यक्षता, विद्यापीठ के कुलपति डॉ० राघवेन्द्र नारायण आर्य एवं कुल सचिव डॉ० तेज नारायण कुशवाहा ने संयुक्त रुप से किया. मुख्य अतिथि ख्यातिलब्ध दार्शनिक डॉ० रामजी सिंह ने उन्हें यह उपाधि प्रदान की.

इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ने श्रीमती तारा सिंह को उनकी अभूतपूर्व हिन्दी साहित्य सेवा के लिए २००६ के 'राइजिंग परसोनालिटिज अवार्ड' एवं गोल्ड मेडल से विभूषित किया.

श्रीमती सिह को उनकी उत्कृष्ट हिंदी सेवा के लिए अब तक भारती भूषण, विद्या वाचस्पति, संत कबि कबीर सम्मान, सर्वोच्च ज्ञान माला पुरस्कार, महादेवी वर्मा सम्मान, निराला सम्मान, राष्ट्रभाषा विद्यालंकार सहित ३३ अन्य सम्मानों/मानदोपाधियों से नवाजा जा चुका हैं. उनकी नौ काव्य-कृतियॉ प्रकाशित हो चुकी है. उनकी कविता एक हिन्दी सिनेमा के लिए शीर्षक गीत के रुप में ली गई है एवं उनका परिचय एशिया पेसिफिक हू इज हूॅ २००६ और एफ्रो-एशियन हूॅ इज हू २००६ में प्रकाशित कर चुका है.

एड्स जानकारी ही बचाव है
सुरक्षित यौन संभोग, कंडोम का प्रयोग व खून लेते समय सावधानी
जी.पी.एफ.सोसायटी द्वारा जनहित में जारी

अयोग्य के हाथों में राज

✍रामकिशोर, संपादक, स्नेह भेंट

अयोग्य हाथों में आ जाता जब राज बनता नहीं कुछ बिगड़ जाता सब काज।

पारिवारिक उलझनों से त्रस्त होकर पिता ने नाबालिक बेटों को अपना सलाहकार बना दिया. उसके हाथों में परिवार की बागडोर सौंप दी. स्वयं निशस्त्र सा हो गया, मानों जवानी में ही संन्यास ले लिया.

बेटा फूला नहीं समाया, मनमाने फैसले लेने लगा. परिवार के अन्य सदस्य उसे उलटी-सीधी सलाह देते रहे. कुछ अच्छे कार्य भी हो गये, कुछ विवाद सुलझ गये. कम आयु में ही मानों उसे नेतृत्व मिल गया.

परन्तु कई मामलें ऐसे थे, जिनमें परिपक्व दिमाग और अनुभव की आवश्यकता होती हैं. इनके बारे में सोचते हुए वह कतराता रहा. जायदाद की खरीद-विक्री, भाई बहनों की शिक्षा, विवाह आदि के बारे में कोई पुख्ता राय नहीं बन पाती थी. सबकी भिन्न-भिन्न राय रहती, जिन पर फैसला लेने में वह अपने को अक्षम पाता और जिनके बारे में उसके विचारों को परिवार के लोग महत्व नहीं देते थें. ऐसे निर्णय टलते जाते, टलते जाते, लटके रहते.

वह अक्षमता, हीनत्व की भावना से ग्रसित रहता. ऊपर से दर्शाता की वही सर्वेसर्वा हैं. पिता तो उसके सामने निःसत्व हो ही गये थे, उनकी कोई गिनती नहीं थी परिवार में. तब अधिाकांश मामलों में अनिर्णय, टालमटोल और अविश्वास का माहौल बनता रहा.

परिवार के बाहर का कोई व्यक्ति इन मामलों में कुछ कहना चाहे, तो उसे अनुचित बाहरी हस्तक्षेप करार दिया जाता हैं.

विराट हिन्दू सम्मेलन का सफल आयोजन

१६ नवम्बर को प्रीतमनगर, इलाहाबाद में एक विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन, भारत के भगवा चिन्तक के रुप में ख्याति प्राप्त श्री माधवराव सदाशिव रामगोलवलकर के जन्म शताब्दी समारोह के तत्वावधान में किया गया. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय विद्वत परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कामेश्वर उपाध याय थे. इनके अतिरिक्त उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री अशोक मेहता, श्री नरेश अरोड़ा, डॉ. आनन्द शंकर, गुरुद्वारा प्रीतम नगर के ज्ञानी, सुश्री सीमा आदि ने हिन्दू समाज और उसकी समस्याओं से संबंधित विविध पहलुओं और हिन्दू समाज के उत्थान के लिए गुरुजी के कार्यो पर अपने विचार व्यक्त किए. कार्यक्रम की अध यक्षता श्री रिपु दमन लाल श्रीवास्तव ने किया. संचालन समारोह के सचिव श्री भोलानाथ द्विवेदी ने किया.

मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि जामवंत को हनुमान को उनके बल को याद दिलाना पड़ा था उसी प्रकार हिन्दुओं को उनके बल को पहचानने के लिए उनको पूरे वर्ष तक जगाने का कार्य किया जाएगा. हिन्दू सत्ताधारी भुजंगो द्वारा संसद पर हमला करने वालों को सजा देने का विरोध करने वाले नेताओं की कड़ी निन्दा की. इन्होंने हिन्दुओं के ५ प्रकार बताए. गर्वीले हिन्दू, हठीले हिन्दू, लचिला हिन्दू, शर्मीला हिन्दू व पतिला हिन्दू. दृढ़ हिन्दू को सर्वश्रेष्ठ घोषित करते हुए कहा कि उनकी संख्या बढ़नी चाहिए. उन्होंने चेतावनी दी की अब १६२६ नहीं है जो हम बर्दाश्त कर लेगें. हिन्दुओं की आवश्यकता है कि हिन्दूत्व को साथ लेकर चलना पड़ेगा क्योंकि सनातन हिन्दू १०२ करोड़ है. लेकिन यदि हम जाति-पाति में विभक्त हो गये तो लाखों में भी नहीं रहेगें. उन्होंने इस सम्मेलन को हिन्दू संगम की संज्ञा दी.

नरेश अरोरा जी ने कहा कि जो पैदा हुआ वह हिन्दू पैदा होता है, हम अपने संस्कारों से भटक गये है और विभिन्न सम्प्रदाय जाति में बंट गये है लेकिन मूल में हम हिन्दू ही हैं.

+++++++++++++++++++

विराट ब्राहमण सम्मेलन

दिनांक २७ व २८ जनवरी २००७ को बप्पा श्री नारायण सभागार के.के. सी. में विराट ब्राहमण सम्मेलन आयोजित होगा. सामूहिक यज्ञोपवीत व सामूहिक विवाह के भी आयोजन होगें. श्री राधेश्याम दुबे, प्रान्तीय अध्यक्ष, उ.प्र. ब्राहमण संगठन ने भावभरा आमन्त्रण ब्राहमण एकता हेतु सभी भाग लेने वाले महानुभावों के लिए इस पक्ष के माध्यम से दिया हैं.

निवेदकः **राधेश्याम दुबे**

प्रान्तीय अध्यक्ष, उ.प्र.ब्राहमण संगठन

कविताएं

हे मां

शरणागत को है बचाते सभी
फिर कैसे हमें तुम मारोगी मां।
हम छोड़ेगे पांव तुम्हारा नहीं,
कब लौन दया, उर धारौगी मां।।
जब तेरे भरोसे पड़े है यहाँ,
तब कैसे हमें न उबरोगी मां।
हे राधे! 'श्याम' को भरोसा यही
हां, कभी न कभी तुम तारोगी मां।।

राधेश्याम दुबे, स.,श्याम सुदर्शन संदेश

अर्पणा

अंधेरे मुहं
दुहती है वह गाय को
अन्तिम बूंद तक
जैसे उसका लाडला
चूस डालता है उसके स्तन
चूल्हे पर
आग की लपटो में
बिखर जाते हैं मोती
धुआं धुंधले कर देता है
सारे सपने
आंसू बहते है पर
आंख के जालों को
साफ नहीं कर पाते
स्लेट पर खड़िया से लिखी
अधूरी इवारत
उसकी वापसी का
इन्तजार करती रहती है
कंटीली झाड़ियों में
उलझे पंख
पता नहीं कब से
इन्तजार करते रहते हैं
आकाश में उड़ने का
कमर में रस्सी की गाची पहने
तैयार है वह अजेय पहाड़ से लोहा लेने
बीज के साथ साथ
बोती है वह पसीने की बूंदे
हम समझे माटी उर्वरा हैं
रोटी को देती है नमकीन स्वाद
पहाड़ जैसी चट्टानों के नीचे कभी कभी
झरने सी खनकती है उसकी चूड़ियां
और मोतिया हंसी
तभी जंगल भर
गूंजती है उसके चूल्हें की पुकार
लाल पीले रंगीन धातु
कब तक वह हलका महसूस करती है
तो रात की नीरबता को तोड़ता
दूर जंगल में कोई पक्षी
गा उठता है... आदिम गीत।

तेज राम शर्मा, अनाडेल, शिमला

जिन्दगी की रीति से

जिन्दगी की रीति से
जीत ले जहान को
प्रेम; प्यार; प्रीति से।
मुनासिब नहीं भागना,
जिन्दगी के रीति से।।
कुँचल दे तूफान को,
झुका दें आसमान को,
साहस के सुनीति से।।
मुनासिब नहीं भागना,
जिन्दगी के रीति से।।
बचा न अपने जान को
बचा ले तू ईमान को,
मुकर न सच्चे मीत से।।
मुनासिब नहीं भागना,
जिन्दगी के रीति से।।

निगम प्रकाश कश्यप मिर्जापुर, उप्र.

अपने आप से

अपने आपसे
दर्पण को सामने रखकर
अपने आपसे
यहा सवाल कीजिए कि
'आप कौन है'
और,
इस बात की सच्चाई को
महसूस कीजिए कि
आपकी इस सवाल की जबाब में
कैसे
'सैकड़ों जबाबे मौन है' ।

मोनिमा चौधरी 'मनु', आसाम

ग़ज़ल

न्याय और लोक तंत्र का जिसको कहते है मंदर।
आज स्वयं आंखों से देखो क्या हो रहा इसके अंदर।।
जिनके हाथों में सौपी हमने लोकतंत्र की बागडोर।
दूरदर्शन के चैनल दिखा रहे उन्हें सबसे बड़ा घूसखोर।।
रिश्वत लेते चित्र खिंचे हैं उनके बंद कमरो में।
आशा उनसे कैसे रक्खे सेना को लड़ायेगें समरो में।।
विश्व में सबसे अच्छा था भारत का लोकतंत्र
ऐसी घटनाओं से होता जा रहा इसका धीरे धीरे अंत

उमाशंकर भार्गव, गुना, म.प्र.

ग़ज़ल

जाग गहरी नींद से और देख अपना ये चमन,
ये हमारी शान है और ये हमारा है वतन।
देख उसकी भोली सूरत भा किसी भी लोभ में,
जो जलाते घर हमारे दो न तुम उसको शरन।
है न जिनका धर्म-मज़हब और नही इंसानियत,
विष भरा है खून में हर-हाल में करते हनन।
आस्ती का सांप है वो दोगले का है जना,
पीठ पीछे खून पीता सामने करता नमन।
गर बचाना देश है तो मार दो गद्दार को,
झट मिटा दो नाम उसका मत करो पुतला दहन।
धर्म के नाम पर हमको लड़ाते आ रहे,
आ गये फिर वोट लेने सोच कर करना चयन।

शर्मा बैजनाथ 'मिन्टू', अहमदाबाद

डॉ0 श्याम मनोहर व्यास की लघुकथाएँ

सौदा

वह कमसिन थी, यौवन के भार से लदी-फरी और जहीन भी! शिक्षा की उपाधियॉ भी अध्यापिका की नौकरी के लिए काफी थी.

उसका शिक्षक द्वितीय श्रेणी के लिए चयन हो गया. पदोन्नतियॉ भी उसे मिलती गई. उसके संगी-साथी पीछे रह गये.

वह ८-१० वर्षो में शिक्षा विभाग के उच्च पद पर पहुँच गई. एक दिन उसकी अंतरंग सहेली ने उससे पूछ ही लिया-'यार, बताओं तो सही तुम इस उच्च पद पर इतने कम समय में कैसे पहुँच गई? क्या राज है इसका?'

'राज-वाज कुछ नहीं. सब इस दिमाग और शरीर का खेल है. मैंने अपनी सुन्दरता व यौवन का खुला सौदा किया हैं. अधिकारियों की अंकशायिनी बन कर उत्कृष्ट सी.आर लिखवाई, उनके सभी आदेशों का पालन किया, यही राज है भई' वह बोली

सहेली ने कहा-'सच कहा तुमने. आज पैसा, सिफारिश देह व्यापार का ही जमाना है. जिसके पास इनमें से कोई नही है वह दुनियादारी में पिछड़ जाता हैं.

वही बहाना

एक प्रौढ़ महिला एक दिन अपने पुराने गर्ल्स हॉस्टल में पहुँच गई. ४० वर्ष पूर्व की यादें ताजा हो उठी! वह याद कर उस कमरें में पहुँच गई जहॉ कभी वह अपनी सहेली के साथ रही थी. अब उस कमरे में एक युवती रहती थी जो उसी कॉलेज की एम.ए. की छात्रा थी. उसने दरवाजें पर दस्तक दी. युवती ने दरवाजा खोलकर उसका स्वागत किया. उसने उसे पास की कुर्सी पर बैठाया. महिला मन ही मन बुदबुदाई-वही कमरा, वही आलमारियॉ, वही फर्नीचर.... इतने में बाथरुम से निकलकर एक नवयुवक आया! युवती ने उसका परिचय कराया. 'ये मेरे चचेरे भाई है'

महिला फिर मन ही मन बुदबुदाई-'और वहीं बहाना भी'तदनन्तर वह उठकर बाहर आ गई और फिर पुरानी यादों में खो गई.

++++++++++++++++++++

नूतन वर्ष २००७ पर महाविद्यालय के समस्त छात्र छात्राओं व पूरे नगर वासियों को हार्दिक बधाई

15 मई 1986 को श्री कुश भगत व श्रीमती कृष्णावती देवी के घर जन्में मनोज कुशवाहा की प्राथमिक शिक्षा मिशन स्कूल व हाईस्कूल व इंटर बाबा गया दास इंटर कॉलेज, बरहज से हुई. सन् 2005 में बी.आर.डी.पी.जी. कॉलेज छात्र संघ चुनाव में रिकार्ड 823 मतों से उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए. यह उनके जिन्दगी के यादगार क्षणों में से एक है. उन्होंने अपने कार्यकाल को बखूी अन्जाम दिया तथा छात्र–छात्राओं के लिए हर मोड़ पर चाहे वह छात्रवृत्ति का मामला हो, कॉलेज प्रशासन या पुस्तकालय संबंधी कोई कार्य हो. पूरे वर्ष छात्र–छात्राओं की सेवा की. वे हरसम्भव छात्रों व जनता की मदद करते रहे. इनका पंसदीदा खेल शतरंज है और इनके आदर्श नेता अटल बिहारी वाजपेयी है. इनका पंसदीदा पोशाक पैंट–शर्ट है. मनपसन्द जगह गोवा है तथा जो लोग इनके काम में दखल देते है उनसे ये घृणा करते हैं. जिस दिन ये अपनों से दूर होते हैं इनके लिए बुरा दिन होता है. इनकी महत्वाकांक्षा लोकसभा सदस्य बनने की हैं. जिसके लिए इन्होंने अभी से प्रयास शुरु कर दिया हैं.

मनोज कुशवाहा, पूर्व उपाध्यक्ष,
बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आश्रम, बरहज, देवरिया

Advt.01/07S

ज्योतिष के अनुसार सपनों के भी अर्थ होते हैं

स्वप्न क्या है? क्यों देखते है हम स्वप्न? और क्या सचमुच स्वप्न से भविष्य के अच्छे-बुरे का संकेत प्राप्त होता है? इस बारे में कहा जाता है कि निद्रावस्था में आज्ञाचक्र की श्वेत रजत तंरगे मस्तिष्क से अपना संबंध तोड़ लेती हैं और स्वतंत्र हो जाती है. ये इतनी तीव्र तरंगे है कि वातावरण में दूर-दूर तक गमन करती है. इनकी तीव्रता इंद्रियों के कारण कम रहती है, जिनका संबंध इनसे होता है और मस्तिष्क से भी. जब मस्तिष्क सोता है तो ये इतनी तीव्र हो जाती हे कि प्राकृतिक ऊर्जा प्रवाह से भी कहीं ज्यादें तीव्र हो जाती है. इस समय मस्तिष्क से इसका जो अत्यंत क्षीण गुप्त संपर्क बना रहता है वह इन अनुभूति संकेतों को दृश्यों से परिवर्तित करते हैं. चूंकि उस समय मस्तिष्क पूर्ण रुप से सक्रिय नहीं होता, इसलिए इन संकेतो से उल्टे-सीधे अव्यवहारिक दृश्य बनने लगते है. मन क्या है? मस्तिष्क क्या है? अनुभूति कौन करता है? अनुभूति की प्रक्रिया क्या है? मस्तिष्क क्या है? अनुभूति कौन करता है? अनुभूति की प्रक्रिया क्या है? क्या है हमारी अनुभूतियों का जगत, शरीर संपूर्ण का ऊर्जा परिपथ? स्वप्नों, सिद्धियों, भविष्य दर्शन आदि का रहस्य क्या है और पुनर्जन्म एवं कर्मफल का दर्शन क्या है इसे लोग जानने को आतुर रहते हैं.

भारतीय ज्योतिष विज्ञान के अनुसार, सपने निरर्थक नहीं होते और उनके पीछे कोई न कोई अर्थ छिपे होते है. विभिन्न स्वप्नों के फल की बात करें तो उनमें जो व्यक्ति सफेद मकान, बैल अथवा घोड़े पर स्वयं को चढ़ा हुआ देखे उसे सुख मिलता है. जो स्त्री या पुरुष स्वप्न में देवता, ब्राहमण, गाय, बैल, सफेद फूल, सफेद कपड़े, कच्चा मांस, मछली, आम, घोड़ा, दही, फूल या फलदार वृक्ष, सफेद कपड़ें पहने तेजवान बालक, गहने, मंदिर, पर्वत, हवेली, वीर पुरुष, वीणा आदि वाद्य, दर्पण और छत्रादि शुभ वस्तुओं को देखता है, यदि वह रोगी हो तो उसका रोग से पीछा छूट जाता है. यदि निरोग हो तो उसे धन, पुत्रादि का सुख प्राप्त होता हैं.

जो व्यक्ति स्वप्न में अगम्या स्त्री? रजस्वला स्त्री, बहिन, बेटी, गुरु की स्त्री आदि अगम्या है से मैथुन करता है. अंगम्य स्थान में जाता है, अपने शरीर को विष्ठा में लोथपोथ देखता है, अपने या किसी और को रोते देखता है, गिरकर उठ खड़ा होता है, वह जीवनकाल में आरोग्यता और धन पाता है. यदि देवता या पितरों द्वारा आनंदित हो तो भी यहीं फल समझना चाहिए. जो मनुष्य साफ-सुथरे जल में स्नान करता है, किसी मनुष्य को खाता हुआ देखता है, किसी मनुष्य को खाता हुआ देखता है या किसी को चारों तरफ से खून में भीगा हुआ देखता है, रथादि की सवारी करता है, पूरब या उत्तर को गमन करता है, उसे आयु, आरोग्यता तथा अतुल धन और वैभव मिलता है.

जो मनुष्य फल सहित वृक्ष देखता है, उसे धन और संपत्ति मिलती है. यदि फूलों से लदा हुआ वृक्षा देखता है तो सुखी होता हैं. यदि पत्ते, फूल, फल और शाखाओं से युक्त वृक्ष देखता है तोा उसे मनवांछित फल मिलता है. यदि वृक्ष को जलता हुआ देखे तो उसके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं. जो व्यक्ति स्वप्न में तिल, चावल, गेहूं, सरसों, जौ, अन्न का ढेर, शीशा, फूल, छाता, ध वजा, दही, फल, नागरपन, कमल, कलश, शंख और सोने के गहने देखता है उसे सब प्रकार का सुख मिलता है. सूर्य, चद्रमा या तारागण के मंगल और खिले हुए कमलो वाले तालाब का स्वप्न में देखना भी बहुत सुख देने वाला होता है. देवता, पंडित, पितर और राजा स्वप्न में मनुष्य को सुख-दुख या रोग होना कहते हैं, वास्तव में वैसा ही होता है.

जो व्यक्ति स्वप्न में विषपान करता है, कच्चा मांस खाता है, अपने शरीर पर बिष्टा का लेप करता है, स्वयं को बहुत गंदी अवस्था में देखता है अथवा रोता या मरा हुआ देखता है, उसे निद्रा से जागते ही किसी तरह से धन की प्राप्ति अवश्य होती है और शरीर में कोई रोग होता है तो वह भी दूर हो जाता है. स्वप्नावस्था में ज्वाला से रहित अग्नि में होम करते हुए, शरीर में घी लगाए हुए जिस नग्न व्यक्ति की छाती में कमल उत्पन्न हो जाता है वह कोढ़ी हो जाता है और फिर उसी रांग से उसकी मृत्यु हो जाती है.

बाणभट्ट ने लिखा है कि मनुष्य प्रेत योनि, मरे हुए मनुष्यों के साथ शराब पीता हुआ, कुत्तों द्वारा खींचा जाए, तो वह ज्वर से पीड़ित हो जाता है. संभव हे कि उसकी मृत्यु भी हो जाए. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर को धूल से अटा हुआ और कौवे द्वारा ताड़ित देखे उसका जीवन कुछ माह का ही समझना चाहिए. अपने मस्तक व शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखता शुभ नहीं होता. स्वप्न में जो व्यक्ति यह देखे कि काले रंग की स्त्री ने उसे दोनों हाथों से जकड़ रखा है, वह उसी वर्ष काल को प्राप्त होता है. स्वप्न में जो स्वयं काले वस्त्र धारण किये, काले रंग का लोहे का दंडा हाथ में लिए देखे वह तीन महीने में ही मृत्यु को प्राप्त होता हैं.

इधर-उधर की

रोबोट बताएगा समुद्र के रहस्य

विज्ञान के युग में कुछ भी असंभव नही है. ब्रिटेन और अमेरिका सहित पश्चिम के कई देशो में रोबोट से असाधारण काम लिए जा रहे हैं. चिकित्सा के क्षेत्र में इसका योगदान सराहनीय है. यहां तक मि मुश्किल से मुश्किल ऑपरेशन भी ये आसानी से करने में माहिर होते है. लेकिन अब विज्ञानी रोबोट को समुद्र में भेज कर कई तरह की जानकारियां जुटाने में लगे हुए हैं. मसलन अब समुद्री धारा और ताप के बारे में विस्तार से पता लग सकेगा. समुद्र के पानी के खारेपन की भी जानकारी मिल सकेगी. कई साल पहले पांच फुट लंबे ३०० रोबोट समुद्र में उतारे जा चुके हैं. विज्ञानियों का कहना है कि शीघ्र ही ३००० रोबोट समुद्र तल पर छोड़े जाएंगें. ये रोबोट समुद्र तल से ६६०० फुट की गहराई में जाकर दस दिनों तक जानकारी जुटाएंगे. फिर सभी जानकारियों को उपग्रह के जरिए प्राप्त कर इन पर अध्ययन किए जाएंगें. धूएस नेशनल ओशियानिक एंड एटमॉसफेयर एडमिनिस्टेशन के स्टेन विल्डन का कहना है कि रोबोट से मौसम के साथ-साथ समुद्र में मछलियों की संख्या के बारे में भी जानकारी मिल सकेगी. विल्डन का कहना है कि दस साल पहले ३०० रोबोट को इस काम में लगाया गया था, जिससे विज्ञानियों को महत्वूपर्ण जानकारियां प्राप्त हुई हैं. इस सफलता को देखते हुए विल्डन और ३००० रोबोट को समुद्र में भेजने की योजना बना रहे हैं.

३२ साल तक शरीर में चलती रही सुई

दर्द से कराहते लोगों के लिए एक क्षण भी काटना मुश्किल होता है. लेकिन ब्रिटेन में रहने वाली ४३ वर्षीय एन सेज की अलग ही कहानी है. वह पिछले तीन साल से रीढ़ की हड्डी में दर्द से परेशान थी. घर में पड़े रह कर दिन भर कराहते रहना, उनकी दिनचर्या बन गई थी. वह जिंदगी से निराश हो गई थीा. उसने कई मशहूर डॉक्टरों को दिखाया, लेकिन कोई भी यह नहीं पता लगा सका कि आखिर उसे क्या बीमारी है. बाद में एक्स रे हुआ, तो पता चला कि उसकी रीढ़ की हड्डी में एक डेढ़ सेंटीमीटर लंबी सुई अटकी हुई है.

सेज का कहना है कि ग्यारह साल की उम्र में जब वह एक बार चटाई पर कूद रही थी, तो उसके कूल्हें में चोट लगी थी. शायद तभी यह सुई उसके अंदर जा घुसी होगी. ३२ साल के अरसे में यह धीरे-धीरे खिसकते हुए रीढ़ की हड्डी तक चली गई.

जरा हंस दो मेरे भाय

पत्रकार-आपने इतनी दौलत कैस पैदा कर ली?
अमीर आदमी-अपनी पत्नी की सहायता से.
पत्रकार- उसने कैसे मदद की?
अमीर आदमी-मेरी बड़ी से बड़ी कमाई से भी असंतुष्ट रह कर.

नानू-तुम अंग्रजी समझते हो क्या?
मानू-अगर हिंदी में बोली जाए, तो मैं दुनिया ही हर भाषा समझ सकता हूँ.

जज-जब इन दोनों पति-पत्नी में लड़ाई हो रही थी, तो क्या तुम वहां मौजूद थे?
गवाह-जी, हां.
जज-तो तुम्हें कुछ कहना है?
गवाह-यही कि मैं कभी शादी नहीं करुंगा.

अपने पिता के साथ चिड़ियाघर गया बच्चा शेर का पिजरा देख कर कुछ सोचने लगा. पिता ने वजह पूछी-तो वह बोला-मैं सोच रहा हूँ कि अगर शेर ने पिंजरे से निकल कर आपको खा लिया, तो मैं किस नंबर की बस से घर जाऊंगा.

रमा-क्या तुम अपनी किसी सबसे बड़ी बेवकूफी का प्रमाण दे सकते हो?
शाम-तुमसे प्यार कर लिया, यही क्या छोटा प्रमाण है?

बिजली फेल हो गई तो मोमबत्तियां जला दी गई. गर्मी तेज थी. इसी बीच एक मेहमान ने कहा-भाई पंखे तो चला दो. मेजबान ने मुड़कर बड़ी गंभीरता से कहा-नहीं-नहीं. पंखे चलाने से मोमबत्तियां बुझ जायेगी.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफत

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

पुस्तक समीक्षा

हिन्दी–ग़ज़ल के क़द्दावर शायर–रमेश नाचीज

हिन्दी-ग़ज़ल और उसकी परम्परा को समृद्ध करने के लिए 'दिन भी जैसे रात है' रमेश नाचीज के ताज़ा तरीन ग़ज़ल संग्रह का उन्वान ही नहीं है वरन् उसमें आज के समाज की स्पष्ट झलक है. डॉ. बशीर बद्र का शेर, खुद-ब-खुद नोंके-क़लम पर रक़्स करने लगता है-

रात का इंतज़ार कौन करें?
आज कल दिन में क्या नहीं होता ??

समाज की बिगड़ी हुई तस्वीर पर इतना सटीक उन्वान, संग्रह में संग्रहित ग़ज़लों के स्वरुप का भी निर्धारण करता है. रमेश नाचीज के इस ग़ज़ल संग्रह में चौरासी ग़ज़लों के ५२१ अश्आर शामिल है. सबसे ज़ियादा अश्आर जिस वज़न में कहे गए है, वो इस तरह है-मफ़ऊल फ़ायलात' मफ़ाईल फ़ायलुन. हिन्दी-उर्दू के अल्फ़ाज बड़ी खूब सूरती के साथ इस्तेमाल किए गए हैं. मैं रमेश नाचीज को मुबारकवाद देना चाहती हूँ, इस वज़न को कामयाबी के साथ ग़ज़लों में इस्तेमाल करने पर.

जैसा कि रमेश नाचीज खुद एतराफ़ करते हैं कि मोहतरम् एहतराम् इस्लाम साहब ने 'धब्बे को रौशनी का जज़ीरा बना दिया'. आज के दौर में उस्ताद का एहतराम करना उनकी रहनुमाई में अपना सफ़र तय करना, एक मुश्किल तरीन मरहला है जो बाआसानी रमेश नाचीज ने सर किया है.

विरासत में फ़नकाराना अज़्मतों को पाने वाला शायर ही बेलौस अदब की ख़िदमत करता है और अदब में गरांकद्र इज़ाफ़ा भी करता है. ग़ज़ल को जिन्दगी का आईना बनाना और उसमें अपने माज़ी, हाल एवं मुस्तक़बिल के चेहरे को संवारना बहुत ही नेक अमल है और इसम अमल की जितनी भी तारिफ़ की जाए वो कम है. साफ़-साफ़ ज़हनियत और हस्सास दिल से निकली हुई आवाज़ किस खूबसूरती से इन अश्आर में ढली है-

ज़माने को बुरा कहिए यक़ीनन शौक से कहिए।
अगर खुद अपने ऐबों को ज़माने से छुपाना है।।
किसी के सामने ऑसू बहाना, गिड़गिड़ाना क्या?
हमें जब बोझ अपनी ज़िन्दगी का खुद उठाना है।।

बयानिया शायरी वक़्ती तौर पर असर अंदाज होती है लेकिन ता देर असर कायम रखने में नाकामयाब रहती है फिर भी बयानिया शायरी का अपना एक मज़ा हैं और जब यूं अदा हॉ ज़ज्बात तो क्या कहने-

तरक्की का ये कैसा सिलसिला है
प्रदूषण हर तरफ फैला हुआ है।
ग़रीबी से बहुत पाया है हमने
ग़रीबी से कहां हम को मिला है।।

सौती क़ाफ़ियों का इस्तेमाल हिन्दी में जाइज कर लिया जाता है लेकिन उर्दू ग़ज़ल में इससे परहेज बरता जाता है. एक मिसरा जिसमें 'या' और 'कि' का एक साथ इस्तेमाल किया है. मसलन-

'रावण का पक्षधर बनूं मैं या कि 'राम' का

एक और शेर-

मिलेगा तो पूछूंगा 'नाचीज' से मैं
कि नफ़रत से नफ़रत मिटाओगे कैसे

'मिलेगा तो पूछंगा, मिटाओगे कैसे' फेल में इख़्तिलाफ़ पैदा होकर ऐब की शक्ल इख्तियार करता है. इसके बावजूद रोज़, छपने वाले सैकड़ों ग़ज़ल-संग्रहों में 'दिन भी जैसे रात है' ग़ज़ल संग्रह अपना खा़स मकाम बनाएगा और रमेश नाचीज का कलम इसी तरह गौहरे-नायाब किरतास पर उगलता रहेगा, इसी उम्मीद के साथ दुआगों हूँ और अपने कत्ए से अपनी बात समाप्त करती हूँ.

ज़िन्दगी में मुश्किलों की हर घड़ी बरसात है
नेकदिल इन्सान को हर-हर क़दम पर गात है
तय सफ़र कैसे करें इंसानियत का 'राज- जब
धुंध से नफरत की हरसू 'दिन भी जैसे रात है'

पूरे संग्रह पर नजर डालने के बाद कवित्रि प्यार में घायल खिलाड़ी की तरह तड़पती हुई नजर आती हैं. लेकिन काश ऐसा हो ही जाता, मॉ, अपराधी और खादी जैसी कुछ रचनाएँ अच्छी बन पड़ी हैं. फिर भी सराहनीय प्रयास ही कहॉ जाएगा.

समीक्षिकाः डॉ० राजकुमारी शर्मा 'राज'
सी/डी-३०, पुराना कविनगर, गाजियाबाद-२०१००१

पुस्तकः दिन भी जैसे रात है ग़ज़ल संग्रह
ग़ज़लकारः रमेश 'नाचीज'

सराहनीय है कवित्रि का प्रथम प्रयास

नवोदित कवित्रि अर्चना श्रीवास्तव ने अपनी रचनाधर्मिता के अल्पकाल में ही संग्रह निकलवाकर एक अनूठा कार्य किया हैं. प्रस्तुत काव्यं संग्रह 'साहिलों के पार' में कवित्रि ने शेर, ग़ज़ल, कविता और गीत कुल ७८ रचनाएं प्रस्तुत की हैं. कवित्रि ने अपने शेर में कुछ इस तरह ब्यॉ किया है-

!!१!! अपने घर का सुख छोड़ के,
जो गैरों के घर में झॉकते हैं,
उनसे तो दुनियॉ हार गई,
शायद वो खुद से हारते हैं।

!!२!!होंठ चाहे दास्तानें दर्द
कहे या ना कहे,
ऑख से मोती चुराकर
जख्म दे जाता है समय।

कवित्रि ने अपनी ग़जलों में-

तू रफ्ता रफ्ता निखर गया,
मैं लम्हा लम्हा बिखर गया,
ये सुरुर तेरे इश्क का,
मेरे ज़िस्मों जॉ से गुजर गया।..........

पूरे संग्रह पर नजर डालने के बाद कवित्रि प्यार में घायल खिलाड़ी की तरह तड़पती हुई नजर आती हैं. लेकिन काश ऐसा हो ही जाता, मॉ, अपराधी और खादी जैसी कुछ रचनाएँ अच्छी बन पड़ी हैं. फिर भी सराहनीय प्रयास ही कहॉ जाएगा.

समीक्ष्य पुस्तकः साहिलों के पार
रचनाकारः अर्चना श्रीवास्तव
मूल्यः २५०/-रुपये
प्रकाशकः त्रिवेणी प्रकाशन
पुस्तक प्राप्ति स्थलः १. २६१/३३६, चक जीरो रोड, इलाहाबाद,
२. एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए और सदस्यता फार्म भर कर यथाशीघ्र इस पते पर भेजें-
संपादक, 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी-१३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

एक प्रति:रु०५/- **वार्षिक** सदस्यता: रु०६०/- **विशिष्ट सदस्य** : रु० १००/-
द्विवार्षिक सदस्यता : रु०११०/- **पंचवर्षिय सदस्यता** :रु० २६०/-
आजीवन सदस्य : रु०११०१/- **संरक्षक सदस्य** :रु० २५००/-

☞विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

☞आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष २/३का विज्ञापन/संदेश नि:शुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

☞संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष २/३ का विज्ञापन/संदेश नि:शुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरूप प्रत्येक वर्ष अलग से २००रू० तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

☞सबसे अधिक सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को प्रसार श्री व विज्ञापन देने दिलावे वाले को विज्ञापन श्री से सम्मानित किया जाएगा.

सदस्यता फार्म

मैं 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक/द्विवार्षिक/पंचवार्षिक/आजीवन/सरंक्षक सदस्यता ग्रहण करना चाहता/चाहती हूँ तथा पूर्ण विवरण भर कर सदस्यता शुल्क के साथ डी.डी. भेज रहा/रही हूँ. पत्रिका निम्न पते पर भेजनें की कृपा करें.

पूरा नाम:..
पूरा पता:..
शहर:................................राज्य:........................पिन कोड:......................
दूरभाष :(आ.)..................................(कार्या.)..
डी.डी. नम्बर..दिनांक:.........................

हस्ताक्षर

नोट: सदस्यता शुल्क मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट के जरिये ही स्वीकार किया जाएगा.

ईनामी प्रतियोगिता

अपना निबंध भेजें और जीतें हजारों रुपये के ईनाम

विषय: आतंकवाद कारण एवं निवारण

आज आंतकवाद पूरे विश्व के लिए एक ऐसी समस्या बन चुकी है जिससे पार पाना असम्भव सा दिखता है. इस समस्या से कैसे निपटा जाए. क्या हो इसका समाधान. इसी विषय पर राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज ने एक प्रतियोगिता राष्ट्रीय स्तर पर कराने निर्णय लिया है.

नियमः

१. इसमें पूरे भारत का कोई भी नागरिक भाग ले सकता है. प्रतिभागी को अपना लेख एक टिकट लगे जबाबी लिफार्फे के साथ **१५ फरवरी २००७** तक नीचे दिए गए पते पर भेजना होगा. प्रतियोगिता में तीन वर्ग होंगें-

जूनियर वर्गः कक्षा ६ से १२ तक (१०-१५ वर्ष)

सीनियर वर्गः स्नातक या स्नातक से ऊपर (१६-३५ वर्ष-केवल अध्ययनरत छात्रों के लिए)

प्रबुद्ध वर्गः ३५ वर्ष से ऊपर सभी के लिए

२. प्रत्येक वर्ग से प्रथम, द्वितीय, तृतीय व दस सात्वना पुरस्कार दिए जाएंगें. इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय राष्ट्र स्तर पर व सात्वंना पुरस्कार राज्य स्तर पर दिये जाएंगें. प्रत्येक जिले से सर्वोच्च २५ प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा.

प्रथम पुरस्कारः १०००/- द्वितीय - ७५०/-, तृतीय-५००/-)

सात्वनां पुरस्कार २५०/-रु० व प्रमाण पत्र दिए जाएगें.

आवेदन-पत्र प्रारुप

अभ्यर्थी का नामः ....

पिता का नामः.. जन्म तिथिः ....

स्कूल/कॉलेज/संस्था का नामः...

पत्र-व्यवहार का पताः..

.... मो०.......................... दूर०...................................

प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

प्रविष्ट्रिंया निम्न पते पर भेजें: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, संपादक
रा.हि.मा.विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
मो. 9335155949 **Email:** vsnehsamaj@rediffmail.com, gpfsociety@rediffmail.com

नोटः १. प्रतियोगिता में निर्णायंक मंडल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. २. नियमों में परिवर्तन का सर्वाधिकार पत्रिका परिवार के पास सुरक्षित रहेगा.३. विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र इलाहाबाद ही होगा. ४. ईनामी राशि नगद/उपहार भी हो सकती है व बढ़/घट भी सकती है.